ISSN : 2456-8856

पंजीयन संख्या RNI No.: MPHIN/2002/09510 डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिवीजन/204/2024-2026 उज्जैन (म.प्र.)

UGC Care Listed and Peer Reviewed Referred Bilingual Monthly International Research Journal

प्रेषण दिनांक 30 पृष्ठ संख्या 28

आश्वस्त

वर्ष 26, अंक 251 सितम्बर 2024

सावित्रीबाई फूले

भारत की प्रथम महिला शिक्षिका

"स्वाभिमान से जीने के लिए पढ़ाई करो।
पाठशाला ही इंसानों का सच्चा हितैषी है।"

तमसो मा ज्योतिर्गमय

संपादक – डॉ. तारा परमार

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन की अन्तर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

वर्ष : 26 अंक 251
सितम्बर 2024

आश्वस्त

(सन् 1983 से निरंतर प्रकाशित)

RNI No.: MPHIN/2002/09510
ISSN : 2456-8856

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन (पंजीयन क्रमांक 2327 दिनांक 13/05/1999) की मासिक पत्रिका

संस्थापक सम्पादक
डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी

संरक्षक
सेवाराम खाण्डेगर
11/3, अलखनन्दा नगर, बिड़ला हॉस्पिटल के पीछे,
उज्जैन मो.: 98269-37400

परामर्श
आयु. सूरज डामोर IAS
पूर्व सचिव-लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण वि.
म.प्र.शासन, भोपाल मो. 094253-16830

सम्पादक
डॉ. तारा परमार
9-बी, इन्द्रपुरी, सेठी नगर, उज्जैन-456010
मो. 94248-92775

सम्पादक मण्डल :
डॉ. जयप्रकाश कर्दम, दिल्ली
डॉ. खन्नाप्रसाद अमीन, गुजरात
डॉ. जसवंत भाई पण्ड्या, गुजरात
डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, म.प्र.

Peer Review Committee
डॉ. श्रवणकुमार मेघ, जोधपुर(राजस्थान)
प्रो. दत्तात्रय मुरुमकर, मुंबई (महाराष्ट्र)
प्रो. रश्मि श्रीवास्तव, उज्जैन (म.प्र.)
डॉ.बी.ए.सावंत, सांगली (महाराष्ट्र)

कानूनी सलाहकार
श्री खालीक मन्सूरी एडव्होकेट, उज्जैन

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1	अपनी बात	डॉ. तारा परमार	3
2	हाशिए के समाज का दस्तावेज : 'सांप'	डॉ. सचिन कदम	4
3	डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर का जीवन और दर्शन : दलित विमर्श की वैचारिक पृष्ठभूमि	प्रो. हसमुख परमार	6
4	''जंक फूड (अस्वास्थ्य आहार) की उच्च खपत के संबंध में दिल्ली विश्वविद्यालय के महाविद्यालयों के गैर-खिलाड़ी छात्रों के ज्ञान, दृष्टिकोण और प्रथाओं का आकलन करना''	डॉ. हिमानी मल्होत्रा	9
5	Analysing Land Acquisition Challenges in India with special reference to char Dham High way project and Stature of Unity Project	Dr. Paramita Bhattacharyya Purbita Das	11
6	हाशिये पर स्थित समुदाय : पर्यावरणीय अन्याय के भुक्तभोगी	प्रा. (डॉ.) सुभाष भिमराव दोंदे	16
7	कवि निराला की कविताओं में राष्ट्रीय जागरण	डॉ. दीपक कुमार	19
8	थेरीगाथा : नारी स्वतंत्रता इतिहास के आइने से	डॉ. सीमा राठौर	22
9	Integration of Happiness Curriculum and English Language Teaching	**Manju** (Ph. D. Scholar) **Dr. R. Thangam** (Research Guide)	24

UGC Care Listed Journal

खाते का नाम - आश्वस्त (Ashwast)
खाते का नं.- 63040357829
बैंक - भारतीय स्टेट बैंक,
शाखा- फ्रीगंज, उज्जैन (Freeganj, Ujjain)
IFS Code - SBIN0030108

Web : www.aashwastujjain.com
E-mail : aashwastbdsamp@gmail.com

एक प्रति का मूल्य	:	रुपये 20/-
वार्षिक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 200/-
आजीवन सदस्यता शुल्क	:	रुपये 2,000/-
संरक्षक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 20,000/-

विशेष : सम्पादन, प्रकाशन एवं प्रबंध अवैतनिक तथा पत्रिका में प्रकाशित विचारों से सम्पादक-मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। विवाद की स्थिति में न्यायालय क्षेत्र उज्जैन रहेगा।

अपनी बात

''शिक्षा का लक्ष्य लोगों को नैतिक व सामाजिक बनाना है। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का आधार है, शिक्षा वह है जो व्यक्ति को उसके अस्तित्व, क्षमता और सामर्थ्य से अवगत कराती है।'' – डॉ. बी. आर. अम्बेडकर

स्वतंत्र भारत में शिक्षा में सुधार हेतु विभिन्न आयोग एवं समितियां गठित की जाती रही है–1948–49 में राधाकृष्णन आयोग, 1952 में मुदालियर आयोग, 1964–66 में कोठारी आयोग का गठन एवं 1986 में नई शिक्षा नीति लाने के साथ–साथ आचार्य राममूर्ति समिति, यशपाल समिति आदि। इन आयोग, समितियों द्वारा अच्छे सुझाव भी दिये गये परन्तु राजनीतिक इच्छा शक्ति के अभाव में इनका वास्तविक क्रियान्वयन नहीं हुआ, दूसरी ओर सरकार द्वारा किये गये प्रयासों का क्रम भी दिशाहीनता दिखाता है। प्रथम आयोग उच्च शिक्षा हेतु बना, द्वितीय आयोग माध्यमिक शिक्षा हेतु बना तो तीसरा आयोग समग्र शिक्षा हेतु बना। प्राथमिक शिक्षा जो कि शिक्षा की नींव या आधार होता है इसके लिये कोई आयोग नहीं बना।

स्वतंत्र भारत में शिक्षा कभी प्राथमिकता का विषय नहीं रही। प्रथम शिक्षा नीति 1968 में बनी, द्वितीय शिक्षा नीति 1986 में बनी उसके बाद वर्तमान सरकार ने पुनः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर कार्य आरंभ किया है, जिसके क्रियान्वयन के लिये लगातार बहस, सेमिनार और सुझाव आमंत्रित किये गये और विश्व विद्यालय स्तर पर उसकी शुरूआत भी होने लगी है।

प्राथमिक स्तर व माध्यमिक स्तर पर बच्चे विद्यालय में बुनियादी मानवीय गुण जैसे–सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, पारस्परिक सहयोग और एक अच्छा मनुष्य बनने के सभी गुण सीखता है इसलिये विद्यालय को समाज का लघु रूप कहा जाता है। पालक बच्चों को विद्यालय में सीखने व पढ़ने के लिए दाखिला दिलाते हैं। इस सीखने व पढ़ने के कई प्रयोग विगत वर्षों में होते रहे हैं। लेकिन जब मूल्यांकन की बारी आती है जो परिणाम आशानुरूप नहीं मिलते हैं जिसके पीछे अनेक कारण है। शिक्षकों की नियमित भर्ती, शिक्षण प्रशिक्षण, स्थानांतरण नीति, स्कूलों में अपर्याप्त स्टाफ, विद्यालय तक पहुंच मार्ग, बालिकाओं की सुरक्षा आदि सामने आते हैं। योजनाएं सब अच्छी बनती है लेकिन क्रियान्वयन सही तरीके से नहीं होना भी एक समस्या है।

डॉ. अम्बेडकर का संदेश है कि विद्यार्थियों को शिक्षा केवल डिग्री या नौकरी पाने के लिये ही नहीं, बल्कि शिक्षा के द्वारा उनमें संभावित क्षमताओं का विकास हो और वे अपने क्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल कर समाज की समस्याओं के निराकरण में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करें।

शिक्षा व्यक्ति को अपने अधिकार और कर्तव्यों के प्रति जागरुक करती है। लेकिन आज की शिक्षा व्यवस्था केवल 'अंक' आधारित हो गई है। बच्चे से माता–पिता अपेक्षा करते हैं कि वह येन–केन प्रकारेण अधिकाधिक अंक प्राप्त करे जबकि शिक्षा भावी जीवन की तैयारी के लिये दी जाती है। जीवन में आने वाले उतार–चढ़ाव, समस्याएं, चुनौतियों से कैसे दो–चार हुआ जाए, प्रत्येक परिस्थिति में व्यक्ति संतुलित रहे और इन परिस्थितियों से निजात के समाधान ढूंढ़ सके तभी उसका शिक्षित होना सार्थक है।

क्षमताओं का विकास अच्छे भविष्य की गारंटी है, न कि मार्कशीट या अंक सूची। यह भाव शिक्षा व्यवस्था के केन्द्र में लाना भी एक चुनौती है। अभी कुछ समय पहले समाचार पत्र में एक खबर छपी थी कि एनसीईआरटी की किताब बाजार में नहीं, ई–कॉमर्स पर आठ से दस गुना दाम पर बिक रही है। कहीं शिक्षकों को अतिशेष बताकर स्थानांतरित कर दिया जाता है। दूसरी ओर सरकार भी शिक्षा पर जीडीपी का 6 प्रतिशत खर्च करने का वादा करके इसका केवल आधा ही खर्च कर रही है जिसके पीछे संसाधनों की कमी का हवाला दिया जाता है। जबकि शिक्षा में फंडिग के लिए किए गये व्यय पर एक विशेष 'उपकर' बनाया गया है। ताकि देश के सभी भावी नागरिकों को सुलभ और सस्ती शिक्षा प्रदान करना ही सुशासन का पहला दायित्व है। धातव्य है कि 'कर' और 'उपकर' के मध्य अंतर यह है कि कर देश की समेकित निधि में जमा होता है जिसका कोई परिभाषित अंतिम उपयोग नहीं होता, जबकि 'उपकर' का प्रयोजन स्पष्ट होता है और उसे उसी कार्य के लिये खर्च किया जाना होता है जिसके लिये उसे लागू किया गया है। संविधान का अनुच्छेद 270 उपकर के उन करों के पूल के दायरे से बाहर रखने की अनुमतति देता है जिन्हें केन्द्र सरकार को राज्यों के साथ साझा करना होता है। इसलिये केन्द्र सरकार के लिये यह अनिवार्य है कि वह एकत्रित उपकर को उसके निर्धारित उद्देश्य के लिए ही खर्च करे जिससे कि उसके द्वारा प्रदान की जाने वाली सुविधाओं की गुणवत्ता और मात्रा में गुणात्मकता आ सके।

अतः देश को समृद्ध बनाने के लिये इन सभी मुद्दों पर गंभीरता से विचार किया जाना समय की मांग है।

– डॉ. तारा परमार

हाशिए के समाज का दस्तावेज : 'सांप'

– डॉ. सचिन कदम

समकालीन हिंदी साहित्यकारों में रत्नकुमार सांभरिया बहुचर्चित एवं प्रतिभा संपन्न दलित लेखक हैं। वर्तमान स्थिति में दलित, उपेक्षित, पिछड़े, आदिवासी समाज, समूह पर जितने भी लेखकों ने अपनी साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से पर्दाफाश किया। उनमें से रत्नकुमार सांभरिया का नाम सबसे ऊपर आता है। उन्होंने समाज से उत्पीड़ित वर्गों का दुख, दर्द, पीड़ा एवं वेदना को अपने 'सांप' उपन्यास में चित्रित किया है। स्वतंत्रता के बाद भी आज पूंजी–पति द्वारा दलित एवं आदिवासी समुदाय उत्पीड़ित है। उपन्यास घुमंतु व घुमक्कड़ समूह का प्रतिनिधित्व करता है। घुमंतु समाज को जीने के लिए जो अवसर एवं संसाधनों का होना जरूरी है, वह नहीं मिल रहा है। धरती को बिछाना और आकाश की चादर ओढ़ कर सो जाना यही उनकी दर्द भरी कहानी है। इस स्थिति के पीछे समाज में होने वाली परंपरा एवं जाति प्रथा है। सांप एक भोला भाला डरपोक जीव है। लेकिन उसे छेड़ने पर वह काल–विकराल साक्षात मौत बन जाता है। 'सांप' नाम का यह प्राणी रत्नकुमार सांभरिया के सद्यः प्रकाशित उपन्यास 'सांप' का आधार है। उपन्यास में दर्शाया गया है कि आज भी भारतीय समाज में जाति भेद जैसी शोषणकारी समस्या कायम है। इसी कारण ऊंची जाति के लोग निम्न जाति के लोगों को प्रताड़ित करते हैं। समाज का एक हिस्सा होते हुए भी उनसे दूरी रखकर बर्ताव किया जाता है। जैसे उपन्यास में सुकंदर दास, मुकुंदर दास, ठेकेदार, मिलन देवी, चमना दास, थानेदार, ओमपाल, एम.एल.ए धरमकुंवर, सूरत देवी आदि उच्च जाति का प्रतिनिधित्व करते हैं। दूसरी ओर लखीनाथ, रामती देवी स्वरूपानाथ, धुनाराम, सरकीबाई आदि पात्र निम्न जाति का प्रतिनिधित्व करते हैं। ठेकेदार जो ऊंची जाति का होकर अपने यहां श्रम करने वाले मजदूरों का शोषण करता है। थानेदार जवाबदारी से लखीनाथ और उसका दोस्त मदारी को पुलिस हिरासत में लेते हैं। डॉ. एस. एल. साध डॉक्टर होते हुए भी महिलाओं का शोषण करता है। इस प्रकार से समाज का हर प्रतिनिधि अपने बारे में सोचकर अवसरवादी भूमिका को सामने रखकर कार्य करता है।

'सांप' उपन्यास हिंदी साहित्य की अनूठी रचना है। सांभरिया ने वर्तमान समाज का खोखलापन सामने लाने का प्रयास किया है। "रत्नकुमार सांभरिया का सद्यः प्रकाशित 'सांप' उपन्यास घुमंतू जातियों के सामूहिक संघर्षों का जीवंत दस्तावेज है।"[1] सपेरा, मदार, कलंदर, कंजर, बहुरूपिया आदि घुमक्कड़ जातियों की विषमताओं को लेकर लिखा गया यह उपन्यास इन लोगों की दुष्कर जीवन शैली का पर्दाफाश करता है। 'सांप' उपन्यास सामाजिक विषमता आर्थिक विषमता उच्चता–नीचता जैसी भेद नीति को दर्शाता है।

डेरा बस्ती में रहने वाले सभी घुमंतू अपने – अपने जात–बिरादरी की मर्यादा को पार न कर पशु–पक्षियों के सहारे अपना जीवन जीने का प्रयास करते हैं। उपन्यास इसे भी दर्शाता है कि मजदूर ईमानदारी, वफादारी से काम करते है किंतु उन्हें हिंदू होकर भी स्वीकारा नहीं जाता। यह मानसिकता समाज में सद्भाव की भावना नहीं है। उपन्यासकार के शब्दों में "समय–समय पर जातीय मानसिकता, यौन उत्पीड़न जैसी समस्या को झेलना पड़ता है।"[2]

अज्ञान एवं अंधश्रद्धा भारतीय समाज में आरंभ से है। जाति प्रथा के कारण समाज ने अनेक नियमों का निर्माण किया। इस नियमों से धार्मिक तत्वों को आधार दिया गया। कहा गया की जाति प्रथा, ईश्वर द्वारा निर्मित की गई है। रीति–रिवाज, परंपरा, त्यौहार यह ईश्वर की देन है, इसे मानना चाहिए। इसी कारण समाज का बड़ा हिस्सा अज्ञान एवं अंधश्रद्धा में डूब गया। धर्म और ईश्वर की काल्पनिक कथाओं को

अपनाकर शोषण किया गया। उपन्यासकार का कहना है कि "घुमंतू समाज के लोग शिक्षा न मिलने से दर–दर की ठोकरें खाने पर मजबूर है।"[3]

उपन्यासकार ने उपन्यास के माध्यम से भारतीय लोकतंत्र में दोषपूर्ण चुनाव प्रक्रिया को सामने रखने का प्रयास किया है। एम. एल. ए भंवरदत्त तथा उनके साथी समाज हित को छोड़कर स्वार्थी नीति अपनाते हैं। जब मिलन देवी अपने जन समिति की ओर से घुमंतु समुदाय की जन कल्याण की फाइल लेकर सरकारी दफ्तर पहुंचती है तो उस वक्त मिलन देवी की फाइल को नजरअंदाज किया जाता है। समाज कल्याण मंत्री तथा एम.एल.ए का कहना होता है "कि जब इलेक्शन नजदीक आएगा तब यह समाजहित करेंगे।"[4] समाज के प्रति नेता की अवसरवादी भूमिका दिखाई देती है। सरकार के मंत्री गण समाज के प्रति उदासीन है। मिलन देवी निःसंकोच अपनी बात रखती है। स्थाई निवास नहीं होने के कारण इनकी पीढ़ियां निरक्षर रहीं। शिक्षा से लाभान्वित नहीं हो पाई। वह कहती है "सर, बिना शिक्षा के लोग समाज और राष्ट्र की मुख्य धारा में नहीं जुड़ पाएंगे। शिक्षा ही विकास का मार्ग प्रशस्त करती है।"[5] आज की स्थिति में मिलन देवी जैसे अनेक लोग है जो समाज को न्याय दिलाने का काम करते है। इसलिए उपन्यासकार का कहना है कि संविधान में दलित, पिछड़े, आदिवासी समाज के प्रति होने वाले प्रावधान का अमल किया जाए। नेताओं ने समाज, वर्ग, भाषा, प्रांत से ऊपर उठकर कार्य करना चाहिए।

उपन्यास का मुख्य पात्र लखीनाथ अपने समाज की आपबीती वर्णित करता है कि हमारे समाज को आजादी के बाद भी अपने ही देश में बिना हक्क व अधिकार, मकान, जायदाद और जमीन के सिवाय रहना पड़ता है। इतना ही नहीं समाज का शोषण हो जाता है। लखीनाथ के शब्दों में– "हम घुमक्कड़, घुमंतू लोगों की जिंनगानी है कोई ? देश आजाद हुयो, कितना बरस बीत गया म्हारा सिर से छाया तक ना। खाली पड़यो सरकारी चक–चाका। बहरा सुधार डेरा बसवा । सरकार की नजर पड़ जावे। पुलिस को डंडे खुडंक जावै। डेरा सिर से उठा के भावणों पडयै। रात–बीरात। सबसे पुराना हम। अपना ही देश में बेगाना–बीराना हम। उसने सांस खींची और खेतों की ओर देखते छोड़ दी, म्हारे भी एक–एक खेती होती। मौत ने घर में क्यों रखता । मौत के साथ क्यों जीता ? मौत को बेपार क्यों करता ?[6]

समाज में आज भी पुरुष प्रधान संस्कृति का प्रभाव होने के कारण महिलाओं का शोषण किया जाता है। लखीनाथ की पत्नी रमतीबाई को भी शिकार होना पड़ा। इतना ही नहीं मिलन देवी जो सेठ जी मुकुंददास की पत्नी है। उन्हें डॉक्टर एस. एम. साध से यौन उत्पीड़न का शिकार होना पड़ा। उपन्यासकार कहता है कि महिलाओं के संरक्षण के प्रावधान है, इतना ही नहीं विभिन्न कानून भी है। लेकिन उनकी सही तौर पर अमल न होने से दिन–ब–दिन उत्पीड़न का सामना करना पड़ रहा है। घुमंतू समाज के शोषण पर प्रकाश डालते हुए महिलाओं के शोषण को लेकर समाज के सामने लाने का प्रयास उपन्यासकार ने किया है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि सांप उपन्यास एक ऐसे समाज का प्रतिबिंब है, जो हजारों साल अपनी प्रतिभा के होते हुए भी देख नहीं सकते थे। उसे समाज की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक स्थिति पर प्रकाश डालते हुए अन्य समाज जैसे उन्हें भी जीने का अधिकार है। अगर पूरे भारतवर्ष को प्रगति के पथ पर लेकर जाना है तो घुमंतू जैसे अन्य समाज को देश के नागरिक समझकर उन्हें अपने साथ लाना होगा।

– **डॉ. सचिन कदम**
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
संगमनेर नगरपालिका कला, दा. ज. मालपाणी वाणिज्य
एवं ब.ना. सारडा विज्ञान महाविद्यालय (स्वायत्त),
संगमनेर, जिला–अहमदनगर–422605,
मोबाइल नंबर 9404051942

संदर्भ :

1. राजस्थान पत्रिका – डॉक्टर प्रणु शुक्ला – पृ. 04
2. सांप – रत्नकुमार सांभरिया – पृ. 52
3. सांप – रत्नकुमार सांभरिया– पृ. 134
4. सांप – रत्नकुमार सांभरिया– पृ. 348
5. सांप – रत्नकुमार सांभरिया– पृ. 348
6. सांप – रत्नकुमार सांभरिया– पृ. 57

डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर का जीवन और दर्शन : दलित विमर्श की वैचारिक पृष्ठभूमि

– **प्रो. हसमुख परमार**

दलित विमर्श का विधिवत् प्रारंभ या यूँ कहिए कि एक साहित्यिक आंदोलन के रूप में, एक अवधारणा के रूप में दलित विमर्श आधुनिक काल की देन है, लेकिन हम यह भी सुनते–पढ़ते और मानते आ रहे हैं कि दलित–विमर्श–यात्रा का प्रारंभ बौद्ध धर्म के उदय के साथ होता है। हिन्दी साहित्य के अंतर्गत दलित–स्थिति संबंधी चिंतन–मनन के कतिपय संदर्भ आधुनि काल के पूर्व आदिकाल में सिद्धों और नाथों के यहाँ मिलते हैं। इसके बाद दलित विमर्श में एक नया और उज्ज्वल अध्याय जुड़ा मध्यकाल के भक्तिकाव्य की निर्गुणधारा के संतकाव्य का, जिसके प्रतिनिधि कवि थे कबीर। भक्तिकाल के इन संत कवियों के पश्चात रीतिकाल में रीतिमुक्त कवियों में तथा नीति विषयक काव्य की रचना करने वालों में यह चेतना थोड़ी बहुत मिलती है। इसे एक बहुत बड़ा 'गैप' ही कहना चाहिए।

आधुनिक काल का 'नवजागरण' जिसे कई इतिहासकार भारतीय उत्क्रान्ति (Indian Renaissance) कहते हैं, कई नवीन सामाजिक मानवीय मुद्दों को लेकर आता है । इन मुद्दों में मुख्य दो हैं– नारी विमर्श और दलित विमर्श। ब्रह्मसमाज, प्रार्थना–समाज, आर्यसमाज, थियोसोफिकल सोसायटी जैसी समाजिक–धार्मिक संस्थाओं के कारण उपर्युक्त दोनों मुद्दों को लेकर पर्याप्त विचार–विमर्श हुआ। कुछ महानुभावों के नाम इस विषय में विशेष उल्लेखनीय रहे हैं जिनका दलित विमर्श से किसी न किसी प्रकार का जुड़ाव रहा। जिनमें–गोपालराव हरिदेशमुख 'लोकहितवादी', महात्मा ज्योतिबाफुले, गोपाल गणेश आगरकर, लोकमान्य तिलक, महर्षि प्रो. अण्णासाहब कर्वे, श्रीमंत महाराजा सयाजीराव गायकवाड, गोपालकृष्ण गोखले, महात्मा गाँधी, डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर प्रभृति ।

आधुनिक काल में दलित विमर्श को एक मजबूत वैचारिक आधार प्रदान कर उसे उच्चतम शिखर पर पहुँचाने वाले बाबा साहब अंबेडकर न केवल भारत के बल्कि विश्वविख्यात नेताओं में अपना विशेष स्थान रखते हैं। दलित विमर्श के महान अनुसंधानकर्ता और गंभीर अध्येता अंबेडकर दलित विमर्श के एक बहुत बड़े पर्याय बन गए हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि दलित वर्ग की वास्तविक स्थिति का ज्ञान जितना बाबासाहेब को था उतना शायद और किसी विचारकों को नहीं था। आखिर पुस्तक की लेखी और पढ़ी' तथा 'आँखन की देखी' साथ ही 'सहानुभूति' और 'स्वानुभूति' में फर्क तो होता ही है ।

अम्बेडकर की वैचारिकता पर वैज्ञानिकता, आधुनिक सामाजिक चिन्तन और पश्चिमी राजनीतिक–आर्थिक अवधारणाओं की गहरी छाप रही। दलितोद्धार व सामाजिक क्रान्ति के मामले में अम्बेडकर के आदर्श एवं प्रेरक बिंदु रहे हैं– गौतम बुद्ध, , कबीर और ज्योतिबाफुले। ये तीनों मनुष्यता के पूर्ण पर्याय, दलितोद्धार के भी प्रबल हिमायती थे। "डॉ.अम्बेदकर ने इस बात को सदैव दुहराया कि उनके ऊपर गौतम बुद्ध, कबीरदास और ज्योतिबाफुले का प्रभाव था। कबीर ने उन्हें भक्तिमार्ग दिखाया। ज्योतिबाफुले से उन्हें संघर्ष की प्रेरणा मिली। जो कुछ भी द्विजवाद के विरुद्ध उनका सक्रिय संघर्ष है उसकी प्रेरणा महात्मा फुले थे । बुद्ध ने उन्हें मानसिक व कायिक शांति का संदेश दिया। उन्हीं के आदर्शों पर चलकर उन्होंने सामूहिक धर्म परिवर्तन का काम किया। उनके आदर्शों का ही अनुकरण करके दलित उद्धार का कार्य किया जा सकता है।" (डॉ. भीमराव अम्बेदकर, व्यक्तित्व के कुछ पहलू, मोहन

सिंह, पृ.07)

दरअसल दलित समाज की दुर्दशा को लेकर बाबासाहेब सवर्ण मानसिकता को ही सिर्फ जिम्मेदार नहीं मानते बल्कि सवर्ण तत्त्व के साथ साथ दलितों की अशिक्षा, अपने मानवीय अधिकारों को लेकर उनमें जागरूकता का अभाव, अपमान–अन्याय के विरोध को लेकर उनकी निष्क्रियता आदि को भी जिम्मेदार मानते थे । अतः इस वर्ग में चेतना, संघर्ष की तीव्र भावना तथा शिक्षा के प्रति लगाव पैदा करना अंबेडकर का विशेष उद्देश्य रहा। उनका स्पष्ट मानना था कि किसी भी प्रकार की सामाजिक क्रांति के लिए एक सुस्पष्ट विचारधारा का होना बहुत जरूरी है।

दलितोद्धार के संदर्भ में बाबासाहेब का कार्य सतत संघर्ष का रहा। "शिक्षित बनो, संगठित रहो और संघर्ष करो" इस सूत्र को न केवल उपदेश द्वारा बल्कि अपने जीवन–संघर्ष द्वारा उन्होंने चरितार्थ किया है। दलित वर्ग की चिंता करना, दलितों की स्थिति पर चिंतन, दलितों की दयनीय – शोषित स्थितियों के कारणों की पड़ताल, उनकी समस्याओं का विश्लेषण, उन पर थोपी गई निर्योग्यताओं के खिलाफ चेतना जाग्रत करना, दलितों को अपने अधिकारों के प्रति सचेत करना, उन्हें संगठित कर आवश्यकता पडने पर संघर्ष करने के लिए उन्हें प्रेरित करना ही बाबासाहेब के जीवन का मुख्य उद्देश्य रहा। जिसे लिए यह महान कर्मवीर ताउम्र सामाजिक व राजनीतिक मंच पर डँटे रहे। एक उपेक्षित व शोषित–पीडित वर्ग के उद्धार हेतु उनके इस कार्य की प्रसिद्धि भारत तक ही नहीं बल्कि विश्वस्तर पर रही। इसी के एवज में बाबासाहेब की गणना अब्राहम लिंकन आदि गिने–चुने कुछ विश्वस्तर के नेताओं में होती रही है।

एक दलित परिवार में जन्म लेने के कारण अंबेडकर को बचपन से ही उस जातिगत भेदभाव–अस्पृश्यता का अपमान व दर्द मिला। इसी से जुड़ी अनेक शारीरिक व मानसिक यंत्रणा का सामना करना पड़ा। अपने स्कूली जीवन में दलित होने के कारण उन्हें अपमानजनक स्थितियों से गुजरना पड़ा । छुआछूत के दंश को बचपन से झेलने वाले अंबेडकर ने अपने संस्मरणों में इस स्थिति को बखूबी व्यक्त किया है। "मुझे याद है कि एक दिन मुझे बहुत प्यास लगी। नल को छूने की मुझे अनुमति नहीं थी । मैंने मास्टर जी से कहा कि मुझे पानी चाहिए। उन्होंने चपरासी को आवाज देकर नल खोलने के लिए कहा। चपरासी ने नल खोला और तब पानी पिया। चपरासी गैरहाजिर होता तो मुझे प्यासा ही रहना पड़ता । घर जाकर ही मेरी प्यास बुझती।" (दृष्टव्य– डॉ.अम्बेडकर : एक प्रेरक जीवन, संपादक–रत्नकुमार सांभारिया, पृ–30) इस तरह के और भी कटु अनुभवों का ब्यौरा अम्बेडकर की आत्मकथा Waiting for a visa में मिलता है। असल में दलित होने के कारण अपने और अपने समाज के अपमान की बाबासाहब को शिक्षित, साहसी, दलितों के उद्धारक एवं संघर्षी बनाने में अहम भूमिका रही।

डॉ. बाबासाहेब का समग्र जीवन भारतीय परिप्रेक्ष्य में अछूतोद्धार का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। जातिगत भेदभाव से उत्पन्न उत्पीडन की गंभीर बिमारी से समाज को मुक्त करने के लिए इस अछूतोद्धार आंदोलन की अगुआई बाबासाहेब ने बडी हिम्मत के साथ की और यह कहना भी अनुचित नहीं होगा कि पहले की तुलना में आज दलित वर्ग की स्थिति जो बेहतर है उसका कारण अंबेडकर ही है। वाकई में अंबेडकर दलित समाज के लिए 'बोधिसत्व' ही है। डॉ. विकास दिव्यकीर्ति के एक व्याख्यान में सुना कि जो व्यक्ति अपनी मुक्ति के लिए योग्य है उसके बावजूद भी वह मुक्त होना नहीं चाहता, क्योंकि वह चाहता है कि सबको मुक्त कराकर ही मुक्त होगा । और इस दलित समाज में यदि कोई बोधिसत्व हुआ है तो वह है डॉ. अम्बेडकर । अस्पृश्यता के दलदल से सिर्फ स्वयं को ही नहीं परंतु अपने समाज के हर व्यक्ति को निकालना ही अंबेडकर का संकल्प था। इस संकल्प व कठोर साधना के परिणामस्वरूप वे उच्च व स्तरीय शैक्षिक योग्यता को प्राप्त करते हुए अपने दलित वर्ग के उद्धार के लिए आजीवन प्रयासरत रहे और

सफल भी हुए। वे स्पष्ट कहते थे कि "मेरे लिये मेरे व्यक्तिगत हितों से ज्यादा महत्त्वपूर्ण राष्ट्र के हित हैं किंतु यदि दलितों के हित और राष्ट्रहित के बीच कोई टकराव की स्थिति आएगी तो मैं दलितों के हित को वरीयता दूँगा।"

सही अर्थों में कथनी और करनी से पूरी तरह समर्पित व प्रतिबद्ध इस दलित वर्ग के नेता के कार्य के बारे में मिस्टर ग्लोरेन बोल्टन ने लिखा था–"मिस्टर गाँधी का अछूतों का नेतृत्व मात्र भावनात्मक है। वास्तविक और जन्मजात नेता डॉ.अम्बेडकर ही हैं, जो सर्वत्र अछूतों की बात कहने के साथ–साथ भारत के हितों को बराबर ध्यान में रखते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि इनका जन्म उपेक्षित, निराश, पीड़ित दलित वर्ग के दुःखों को दूर कराने तथा उनके अधिकार दिलाने के लिये ही हुआ है।" (उद्धृत द्वारा– डॉ.अम्बेडकर : एक प्रेरक जीवन, सं. रत्नकुमार सांभारिया, पृ–46)

अछूतोद्धार को लेकर डॉ.बाबासाहेब अम्बेडकर के कार्यों व विचारों की विस्तृत जानकारी हमें उनके लेखन, भाषण, अस्पृश्य निवारण तथा दलितों के अधिकारों के लिए उनकी अगुआई में हुए आंदोलन–सत्याग्रह आदि से प्राप्त होती है । हू वेअर दी शूद्राज ? (शुद्र कौन थे), शुद्र कौन और कैसे, जाति का उच्छेद, बुद्ध और उनका धर्म, गाँधी एवं अछूतों की विमुक्ति, वेटिंग फॉर अ विजा, हिन्दू नारी का उत्थान व पतन आदि पुस्तकों तथा " अमेरिका के कोलम्बिया विश्वविद्यालय में एन्थ्रोपोलोजी के ऊपर हुई परिचर्चा में वहाँ के एक प्रमुख विद्वान डॉ. गोल्डन वेजर के सान्निध्य में एक पर्चा तैयार किया और उसे बहस के लिए प्रस्तुत किया। जिसका शीर्षक था 'भारत में जाति व्यवस्था', जिसमें जाति के निहित सिद्धांत और उसके व्यावहारिक दुष्परिणामों की विशद व्याख्या की।" अंबेडकर के लेखन ने दुनियाभर के पाठकों को आकर्षित और प्रेरित प्रभावित किया है। बाबासाहेब अंबेडकर के कुछ प्रमुख अध्येताओं ने उनकी कुल 21–22 पुस्तकों को विषयवस्तु के आधार पर कुल पाँच भागों में वर्गीकृत किया है– धर्म, समाज, अर्थ, राजनीति तथा इतिहास एवं व्यक्ति । जहाँ तक दलित समाज या दलित विमर्श का विषय है तो उससे संदर्भित किताबों में हम भारत में जातियाँ, जाति का विनाश, शुद्र कौन थे, अछूत कौन और कैसे, गाँधी और कांग्रेस ने अछूतों के लिए क्या किया, गाँधी और अछूतों की मुक्ति, वेटिंग फॉर अ विजा आदि को देख सकते हैं ।

अम्बेडकर के 'मूकनायक' पत्र (1920) के संपादक–प्रकाशन का मूल उद्देश्य भी दलित समाज की जमीनी हकीकत को बताना था। इसी क्रम में अंबेडकर जी द्वारा 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' का गठन। "अछूतोद्धार को नई दिशा देने के लिए डॉ.अम्बेडकर 10 जुलाई 1924 को बम्बई में 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' का गठन किया। इस सभा का कार्य दलितों का चहुँमुखी विकास करना था। (डॉ. अम्बेडकर : एक प्रेरक जीवन, सं. रत्नकुमार सांभारिया, पृ–40) बाबासाहेब के नेतृत्व में हुए इतिहास–प्रसिद्ध महाड सत्याग्रह, नासिक मंदिर प्रवेश आंदोलन, मनुस्मृति दहन आदि से अछूतों को बल मिला तथा शनैः शनैः अपने अधिकारों विशेषतः समानता के लिए चेतना का उनमें संचार हुआ। अन्याय–अपमान के खिलाफ आवाज उठाने की ऊर्जा प्राप्त हुई ।

दलितोद्धार तथा दलितों की दयनीय स्थिति और उसके कारणों के संबंध में बाबासाहेब ने अपने विचारों व मान्यताओं को तर्क व ठोस प्रमाणों के साथ प्रस्तुत किया। दलित वर्ग को लेकर अपने गहन तर्क व चिंतन तथा व्यावहारिक रूप से कई जमीनी ठोस कार्यों से जुड़े अंबेडकर का यह सामाजिक आंदोलन आगे चलकर अंबेडकरवाद नाम से जाना गया। साहित्यिक व सामाजिक क्षेत्र में दलित विमर्श की चर्चा का एक मुख्य आधार अंबेडकर का दलित चिंतन या अंबेडकरवाद रहा है । हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य में जिस दलित विमर्श की आज सोदाहरण व्याख्या हो रही है, विवेचन हो रहा है उसके वैचारिक आधारों में अंबेडकर और अंबेडकरवाद मुख्य है।

डॉ.अम्बेडकर ने दलित मुक्ति के साथ–साथ स्त्री

अधिकारों पर भी विशेष ध्यान दिया। हम देखते हैं कि आज बहुत से लोग अंबेडकर को सिर्फ एक दलित समाज के नेता के रूप में ही मानते हैं। असल में ऐसा नहीं है, माना कि दलित मुक्ति उनके जीवन का एक बड़ा मिशन था, परंतु नारी जाति के उत्थान के लिए भी वह प्रयत्नशील रहे। अपने बौद्धिक बल के आधार पर उन्होंने दलितों, स्त्रियों, गरीबों के उत्थान के लिए कानूनी व्यवस्था में भी अपनी विशेष भूमिका का निर्वाह किया। संवैधानिक प्रावधानों व कानून द्वारा शोषितों–पीडितों की मुक्ति के विषय को महत्व देने वाले इस विराट व्यक्तित्व पर हर कोई भारतवासी गर्व कर सकता है।

अंत में मोहन सिंह के शब्दों में "डॉ. भीमराव अम्बेदकर का नाम भारत के परिवर्तनवादी आंदोलनों के इतिहास में सदैव स्मरणीय रहेगा। वे भारत के दलित समाज के उद्धारक तथा पुरुषार्थ के प्रतिक थे। भारतीय समाज, जो अनन्तकाल से जाति, वर्ग विभाजन के कारण हजारों भागों में विभक्त था, उसके अस्वीकरण का जो सराहनीय प्रयास डॉ. अम्बेदकर ने किया वह भारतीय इतिहास का सुनहरा अध्याय है। जातिप्रथा पर आधारित भारतीय समाज में जन्म–आधारित विषमता थी, रोजी–रोजगार में भयंकर अंतराल था, प्रगति के अवसर जन्मना जाति के आधार पर कुछ हिस्सों के लिए विशेष अवसर प्रदान करते थे और बहुसंख्यक वर्ग के लिए आगे बढ़ने के दरवाजे बन्द थे, द्विजवादी उच्चता के शिकार, अनन्तकाल से जन्म के अभिशाप से अभिशप्त एक बहुसंख्यक वर्ग को डॉ.अम्बेदकर ने अपने साहसिक नेतृत्व से आगे बढ़ने की अदम्य शक्ति दी । (डॉ. भीमराव अम्बेदकर– व्यक्तित्व के कुछ पहलू, मोहन सिंह, पृ. 01)

– **प्रो.हसमुख परमार**
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
सरदार पटेल विश्वविद्यालय
वल्लभ विद्यानगर–388120 (आणंद–गुजरात)
मोबा. 9909035053

''जंक फूड (अस्वास्थ्य आहार) की उच्च खपत के संबंध में दिल्ली विश्वविद्यालय के महाविद्यालयों के गैर–खिलाड़ी छात्रों के ज्ञान, दृष्टिकोण और प्रथाओं का आकलन करना''

– डॉ. हिमानी मल्होत्रा

सारांश :

जंक फूड को ऐसे भोजन के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसमें पोषण मूल्य कम तथा कैलोरी, चीनी, वसा और नमक अधिक होता है। जंक फूड शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर निश्चित रूप से हानिकारक प्रभाव डालता है। वर्तमान शोध कार्य का उद्देश्य जंक फूड (अस्वास्थ्यकर आहार) की अधिक खपत के संबंध में दिल्ली विश्वविद्यालय के महाविद्यालयों के गैर–खिलाड़ी छात्रों के ज्ञान, दृष्टिकोण और प्रथाओं का आकलन करना है। स्नातक और परास्नातक जैसे विभिन्न शैक्षणिक विषयों से दिल्ली विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों के 18–20 वर्ष की आयु के अधिकतम 50 गैर–खिलाड़ी छात्रों (पुरुष और महिला) को यादृच्छिक रूप से चुना गया है। मात्रात्मक डेटा एकत्र करने के लिए, सर्वेक्षण प्रश्नावली विकसित की गई है और चयनित छात्रों को उनकी व्यवहार्यता और सुविधा के अनुसार प्रशासित किया गया है। वर्तमान शोध के निष्कर्षों के आधार पर, अधिकांश छात्रों ने जंक फूड के सेवन के लिए विभिन्न कारण/बाधाओं पर जोर दिया। युवा पीढ़ी को अधिक जागरूकता, मूल्यवान अंतर्दृष्टि और सुविधाएं प्रदान की जानी चाहिए। छात्रों को स्वस्थ खान– पान की आदतों पर औपचारिक शिक्षा या मार्गदर्शन दिया जाना चाहिए और विभिन्न सेमिनार, कार्यशालाएं या शैक्षिक कार्यक्रम छात्रों के लिए आयोजित किए जाने चाहिए।

संकेत शब्द : गैर–खिलाड़ी छात्र, जंक फूड, ज्ञान, दृष्टिकोण, अभ्यास ।

परिचय : न्यूनतम पोषण और बहुत अधिक वसा, चीनी, नमक और कैलोरी वाले भोजन को जंक फूड कहा जाता है। जंक फूड किसी के ऊर्जा स्तर और मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। अधिक मुनाफा, बढ़ते शहरीकरण, मुफ्त होम डिलीवरी, लुभावने विज्ञापनों और अंतर्राष्ट्रीय व्यंजनों (SUBEDI et al., 2021) के कारण जंक फूड की खपत बढ़ रही है। यह दुनिया भर में लोकप्रिय है। ऐसे व्यंजन जो खाने के लिए तैयार अवस्था में, डिब्बाबंद रूप में उपलब्ध होते हैं और लंबे समय तक भंडारित रहते हैं, उन्होंने लगभग पूरी तरह से पारंपरिक व्यंजनों का स्थान ले लिया है। हालाँकि इन भोजनों की खपत विकसित देशों में चरम पर है, लेकिन विकासशील देशों में भी इसकी प्रवृत्ति बढ़ रही है। शरीर पर इसके हानिकारक प्रभावों के स्पष्ट प्रमाण होने के बावजूद जंक फूड युवा लोगों में व्यापक है। इसके सेवन के परिणामस्वरूप मोटापा, मधुमेह मेलेटस, उच्च रक्तचाप और कोरोनरी हृदय रोग जैसी बीमारियां हो सकती हैं (Bohara et al. , 2021)।

उद्देश्य :

वर्तमान शोध कार्य का उद्देश्य जंक फूड की अधिक खपत और स्वास्थ्य पर इसके हानिकारक प्रभाव के कारण दिल्ली विश्वविद्यालय के महाविद्यालयों के गैर–खिलाड़ी छात्रों के ज्ञान, दृष्टिकोण, प्रथाओं और व्यवहार के स्तर की जांच करना है।

पद्धति :

वर्तमान शोध कार्य दिल्ली विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों के स्नातक और परास्नातक जैसे विभिन्न शैक्षणिक विषयों के 18–20 वर्ष आयु के अधिकतम 50 गैर–खिलाड़ी छात्रों पर आयोजित किया गया है। मात्रात्मक डेटा एकत्र करने के लिए, सर्वेक्षण प्रश्नावली विकसित की गई है और चयनित छात्रों को उनकी सुविधा के अनुसार गूगल फॉर्म के माध्यम से प्रशासित किया गया है। सर्वेक्षण प्रश्नावली के माध्यम से, वर्णनात्मक सांख्यिकीय विधियों का उपयोग करके मात्रात्मक डेटा का विश्लेषण किया गया है। वर्णनात्मक सांख्यिकी में एकत्रित आंकड़ों से माध्य और मानक विचलन जैसे मापों की गणना की गई है। सांकेतिक डेटा का मूल्यांकन किया गया और तालिका, प्रतिशत और पाई चार्ट में प्रस्तुत किया गया।

परिणाम और चर्चा :

दिल्ली विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों के गैर–खिलाड़ी छात्रों ने बहुत उत्साह से भाग लिया और सर्वेक्षण प्रश्नावली का जवाब दिया। डेटा विश्लेषण के आधार पर, यह मूल्यांकन किया गया है कि अधिकांश 52.9% छात्र जानते हैं कि जंक फूड में सोडियम, अस्वास्थ्यकर वसा और अतिरिक्त शर्करा अधिक मात्रा में होती है। इसके अलावा 86.3% छात्र जंक फूड के अधिक सेवन से संबंधित संभावित स्वास्थ्य जोखिमों के बारे में पूरी तरह से अवगत नहीं हैं। 38.8% छात्र सप्ताह में एक बार जंक फूड खाते हैं, महाविद्यालयों के अधिकांश (85.7%) छात्र जंक फूड खाने का मुख्य कारण स्वाद और लालसा को स्वीकार करते हैं जबकि 8.2: छात्र स्वस्थ विकल्पों की कमी पर जोर दे रहे हैं। अधिकांश छात्र (55.1%) कुछ हद तक चिंतित हैं। अधिकांश 53.1% छात्रों में से बेहतर स्वास्थ्य के लिए जंक फूड की खपत को कम करने के इच्छुक हैं। 46.9% छात्रों का कहना है कि खाद्य उत्पादों की पोषण सामग्री की जांच करने के लिए वे कभी–कभी खाद्य लेबल पढ़ते हैं, जबकि हमेशा खाद्य लेबल पढ़ने वाले छात्रों की संख्या कम हैं। अधिकांश 49% छात्रों नियमित रूप से शारीरिक व्यायाम में संलग्न होते हैं, जबकि 32.7% छात्र प्रति सप्ताह कुछ बार शारीरिक गतिविधि या व्यायाम में संलग्न होते हैं। 60.4% (बहुसंख्यक) छात्रों को उन अभियानों के बारे में कोई जानकारी नहीं है जो स्वस्थ भोजन प्रथाओं को बढ़ावा देते हैं और उनके महाविद्यालय में जंक फूड की खपत को हतोत्साहित करते हैं। 75% छात्रों ने स्वस्थ भोजन प्रथाओं और जंक फूड की खपत के संबंधित संभावित खतरों पर मार्गदर्शन और औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की है। अधिकतम 51% छात्र अपने कार्यक्रम की उपलब्धता के अनुसार स्वस्थ भोजन प्रथाओं को बढ़ावा देने और जंक

फूड की खपत को कम करने पर आधारित कार्यक्रमों/ कार्यशालाओं में भाग लेने के इच्छुक हैं।

तालिका-1

महाविद्यालयों के गैर-खिलाड़ी छात्रों द्वारा प्रतिक्रियाओं के वर्णनात्मक आँकड़े

क्रम	कोड	औसत	मा.वि.
1.	Q-1	2.3	1.1
2.	Q-2	1.2	0.6
3.	Q-3	2.9	0.8
4.	Q-4	2.3	1.0
5.	Q-5	1.6	0.5
6.	Q-6	1.5	0.6
7.	Q-7	2.2	0.9
8.	Q-8	1.7	0.8
9.	Q-9	1.6	0.5
10.	Q-10	1.3	0.4
11.	Q-11	1.6	0.6

मा.वि. = मानक विचलन; Q = प्रश्न

चित्र : 1

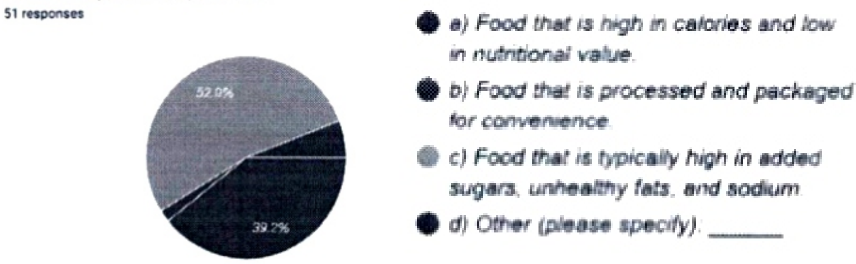

निष्कर्ष : वर्तमान शोध के निष्कर्षों के अनुसार, अधिकांश छात्रों ने जंक फूड के उपभोग के लिए विभिन्न कारण/ बाधाओं पर जोर दिया हैं : (1) स्वाद और लालसा, (2) सहकर्मी प्रभाव, (3) विपणन रणनीतियाँ और लुभावने विज्ञापन (4) स्वस्थ भोजन की तुलना में जंक फूड कहीं भी आसानी से उपलब्ध हैं, (5) परिसर में जंक फूड विकल्पों की उपलब्धता जो छात्रों की आहार प्रथाओं और स्वास्थ्यवर्धक विकल्पों की कमी को प्रभावित करती है, (6) पढ़ाई और विभिन्न गतिविधियों के लिए महाविद्यालयों में व्यस्त और लंबे समय तक काम करने और घर से बाहर रहने के कारण, खाना पकाने की सुविधाओं की कमी के कारण छात्र जंक फूड खाने के लिए बाध्य हैं। वर्तमान शोध के परिणामस्वरूप, जंक फूड के संभावित स्वास्थ्य जोखिमों के बारे में युवा पीढ़ी को अधिक जागरूकता, मूल्यवान अंतर्दृष्टि और सुविधाएं प्रदान की जानी चाहिए और स्वस्थ खान–पान की आदतों पर औपचारिक शिक्षा या मार्गदर्शन दिया जाना चाहिए जो उन्हें जंक फूड की तुलना में तुरंत स्वस्थ भोजन तैयार करने के लिए प्रेरित करें। छात्रों को अपने महाविद्यालयों में स्वस्थ भोजन की आदतों को बढ़ावा देने वाली विभिन्न अभियानों के बारे में अच्छी तरह से सूचित और जागरूक होना चाहिए । जंक फूड की खपत को कम करने पर केंद्रित विभिन्न सेमिनार, कार्यशालाएं या शैक्षिक कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।

– **डॉ. हिमानी मल्होत्रा**
असिस्टेंट प्रोफेसर, डिपार्टमेंट ऑफ फिजिकल एजुकेशन
युनिवर्सिटी ऑफ दिल्ली, भारत
एल–5, सेकण्ड फ्लोर, कीर्ति नगर, नियर मोती नगर
मेट्रो स्टेशन, वेस्ट दिल्ली, दिल्ली–110015 मोबा. 98687 20822

संदर्भ :

- बोहारा, एस.एस., थापा, के., भट्ट, एल.डी., धामी, एस.एस., और वागले, एस. (2021)। पोखरा घाटी, नेपाल में किशोरों के बीच जंक फूड की खपत के निर्धारक। पोषण में फ्रंटियर्स, 8, 6446501 https://doi.org/10.3389/fnut.2021.644650
- सुबेदी, एस., नयाजू, एस., सुबेदी, एस., आचार्य, ए., और पांडे, ए. (2021)। काठमांडू, नेपाल के चयनित शैक्षणिक संस्थानों में उच्च स्तर के छात्रों के बीच जंक फूड सेवन पर ज्ञान और अभ्यास। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च -ग्रंथालयः, 8, 306-3141 https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v8.i12.2020.2872

Analysing Land Acquisition Challenges in India with special reference to Char Dham High way project and Statue of Unity Project

- Dr. Paramita Bhattacharyya
- Purbita Das

Abstract:

This article investigates into the complex scenery of land acquisition challenges in India, with a special focus on two prominent projects: the Char Dham Highway Development Project and the Statue of Unity Project. The

Char Dham Highway Project, aimed at enhancing connectivity to sacred pilgrimage sites, involves the acquisition of land that often intersects with local communities. The analysis explores the details of this process, examining issues such as compensation adequacy, rehabilitation efforts, and the social impact on affected populations. Similarly, the Statue of Unity Project, commemorating the legacy of a national leader, has faced its own set of challenges concerning land acquisition. The study scrutinizes the dynamics involved, assessing the project's impact on the surrounding areas and communities, and scrutinizing the effectiveness of compensation mechanisms.

Key words : Affected people, Tribal communities, Rehabilitation, Resettlement, Compensation

I. INTRODUCTION :

To advance privatization and favour business interests, both the Central government and State governments in India have embraced land pooling policies. The acquisition of land not only impacts individual property rights but also has direct and indirect implications for other rights. Coercion sometimes plays a role in obtaining consent from landowners, who often receive inadequate compensation and lack opportunities for proper rehabilitation. The paper conducts a comprehensive review, examining the extent of land affected, compensation schemes, impacted families, affected villages, and the number of displaced individuals in Char Dham High way project and Statue of Unity Project.

II. CHAR DHAM HIGH WAY PROJECT, UTTARAKHAND, 2016 :

The Char Dham Highway Development Project in India aimed to improve connectivity to the Char Dham pilgrimage sites in the state of Uttarakhand. The project involves the widening and improvement of the existing highways leading to the sacred shrines of Yamunotri, Gangotri, Kedarnath, and Badrinath. Land acquisition is a significant aspect of infrastructure development projects like the Char Dham Highway. The scheme was inaugurated in 2016. The project also proposes the construction of 889 km long national highways to link the entire Uttarakhand. The scheme consists of 2 tunnels, 14 major

flyovers, 100 bridges, 3595 abutments and 13 bypass routes. The table below shows detail of the acquisition.

Table 1 : Affected Land, families and compensation allotted for Chardham Highway Project

Affected land	Affected trees	Affected Families	Project Cost	Compensation
508.66 ha	33,000 -43000	2500-3000 (Affected Families)	Rs. 11,700 cores	Rs 10 lakh per plot (Claimed as compensation along with four times the market value of property)

Source :

https://timesofindia.indiatimes.com/city/dehradun/rudraprayag-villages

displaced-bychar-dham-road-construction-demand-higher

exgratia/articleshow/66816469.cms#:~:text=The%20major%20areas%20that%2

Owill, th rown%20out%20of%20our%20villages. Last visited on 6th August, 2020

The table shows that the project's overall cost is Rs. 11, 700 cores. To make various structures for the Scheme, approximately 33,000 to 43,000 trees will be cut across 7 to 8 districts. In all, 508.66 hectares of forest land will be acquired from which the 475.71 hectares of forest land required permission to divert into the project land. The project has displaced 2500 to 3000 families from the Rudraprayag district. Affected families claimed for Rs 10 lacks as compensation along with additional payments.[1] The government has not taken any consent while declaring about the acquisition. The maximum land that the government declares for acquisition is forest land, and the acquisition is contravening the provisions of forest laws. Other dark sides of the project are that it has gone through no environmental clearance, social impact assessments, no consultations with land owners have been made, no appraisal, no monitoring, no management plans have made.[2] The matter proceeds to the High Court. On 21 July 2020, the Uttarakhand High Court affirmed the constitutionality of the Uttarakhand Char Dham Devasthanam Management Act, 2019.[3]

III. STATUE OF UNITY, GUJRAT, 2018 :

The statue of unity was inaugurated on 31 October 2018. It is located in Gujarat state. It has 182 meters of height. The statue is located on River

Island facing the Narmoda River Sardar Sarobar Dam. The cost of the project was Rs. 2,989 Crores.[4] The monument and surroundings have more than 2 hectares of land and are surrounded on the Narmada River by an artificial lake that is 12 km wide downstream. Table below shows the acquisition detail.

Table 2: Land acquired, affected villages and compensation allotted to statue of unity project

Land Acquired	Villages Affected	Affected trees	Project Cost	Compensation
375 Hectares	72 (Affected villages) 75000 (Affected Tribal people)	200,000	Rs. 2,989 Crores	Rs. 5 lacks (Per plot)

Source : https://www.downto 200,000 Rs. 5 lacks (Per plot) Tribal 2,989 Crores earth.org.in/news/governance/statue-of-unity-or-statue-of-tribalinjustice--61997 last visited on 2 nd July, 2023

The table signifies that a total of 375 hectares (927 acres) of land including tribal land was acquired by the Government of Gujarat for the project development. About 75 000 inhabitants were displaced, and it inflated 72 villages. Apart from above 72 villages, many more villages have been directly and indirectly affected by the construction, and the Government is not recognizing these areas as affected. Tribal people had made a protest of the fact and Gujarat police arrested several tribal activists in Narmada districts.[5] 200,000 trees were cut off for the project. On the other hand, as per the provisions of the Constitution of India, it requires gram sabha clearance in the event of land acquisition in Schedule V territory.[6] Before acquiring land, the Gujarat government did not take permission from the gram sabha of the respective villages.[7] Government has given quite less compensation to the displaced land owners and it has not yet given any compensation to some. The Rs. 5 lack was paid by the government for each plot to some of the plot owners.[8]

IV. CONCLUSION AND SUGGESSIONS :

The people to the aforesaid projects has undergone social, economic, and cultural upheaval due to displacement caused by development. Forced displacement impacts thousands of individuals, significantly affecting both people and communities. Relocation against one's will often leads to a decline in one's previous standing. Recognizing the substantial impact on

victims, it is imperative for the government to provide adequate compensation and rehabilitation. The majority of those displaced belong to impoverished, vulnerable, tribal, and socially disadvantaged communities. Specifically, tribals constitute a socially and economically vulnerable segment of Indian society. While the Indian constitution promises equal opportunity and protection for all citizens, vulnerable sections continue to face marginalization in the course of development.

In the case of land acquisition, now the state is acting as a mediator, therefore the matter is getting unnecessarily government interference. We have seen political interventions in Char Dham High way project and Statue of Unity Project and apart from these, the same thing happened to various incidents like Singur land acquisition incident, Nandigram acquisition incident, Attapadi irrigation project incident, POSCO project incident, Bhavnagar lignite mining incident, Shilpunji incident, Sardar Sarovar dam development violence, Tehiri Dam violence etc. I would suggest direct collaboration between industrialists and land owners.

- Dr. Paramita Bhattacharyya
Assistant Professor
School of Law Brainware University,
Barasat, West Bengal
Mob. 94346 66124

- Purbita Das
Assistant Professor
School of Law Brainware University,
Barasat, West Bengal

References :

[1] https://timesofindia.indiatimes.com/city/dehradun/rudraprayag-villages-displaced-by-char-dhamroad-construction-demand-higher-ex-gratia/articleshow/66816469.cms#:~:text=The%20major%20areas%20that%20will,thrown%20out%20of%20our%20villages. Last visited on 6th August, 2020

[2] /articleshow/63116056.cms (last visited on 1 March 2018)

[3] https://www.newindianexpress.com/nation/2020/feb/11/subramanian-swamy-to-file-pil-againstchar-dham-law-at-request-of-uttarakhand-priests-2102049.html last visited on 22 July,2020

[4] https://economictimes.indiatimes.com/politics/statue-of-unity-worlds-tallest-statue-constructed-inrecord-33-months/articleshow/66446458.cms last visited on 6th August,2020

[5] https://www.downtoearth.org.in/news/governance/statue-of-unity-or-statue-of-tribal-injustice-61997 last visited on 2 nd july, 2019

[6] Fifth Schedule of the Constitution of India

[7] https://www.nationalheraldindia.com/politics/watch-what-is-the-exact-cost-of-the-statue-of-unity last visited on 2 nd july, 2019

[8] https://www.newsclick.in/statue-unity-tribals-72-villages-protests-modi-visit last visited on 7th August, 2020

हाशिये पर स्थित समुदाय : पर्यावरणीय अन्याय के भुक्तभोगी

– डॉ. सुभाष भिमराव दोंदे

सारांश :

जलवायु परिवर्तन से जुड़ी प्राकृतिक या मानव निर्मित आपदाओं का सबसे पहले और सबसे ज्यादा खामयाजा हाशिये पर स्थित समुदाय को भुगतना पडता है। उपनिवेशवादी दृष्टिकोण से बनी मौजूदा पर्यावरण नीतियां और उनके निर्धारण में बने समस्त कानून हाशिये पर स्थित समुदाय के स्वास्थ्य या हित की बात नही करते है। बढ़ते पर्यावरणीय अन्याय और असमानताओं ने इन समुदायों के पारंपरिक आजीविका पैटर्न को काफी हद तक नष्ट कर दिया है। इसके अलावा जलवायु–प्रेरित विस्थापन और स्थानान्तरण के कारण अपने मूल स्थान से पलायन करने और शहरों की झुग्गियों में रहकर गुजर–बसर करने के लिए ये 'पारिस्थितिक शरणार्थी' मजबूर हैं। प्रस्तुत शोधपत्र हाशिये पर स्थित अधिकारहीन समुदायों की बदहाली का पर्यावरणीय अन्याय के परिप्रेक्ष्य में चिंतन करता है ।

(मूल शब्दः जलवायु परिवर्तन, देशज लोग, पर्यावरणीय अन्याय, पारिस्थितिक शरणार्थी, हाशिये पर स्थित समुदाय)

प्रस्तावना :

हाशिये पर स्थित समुदाय से तात्पर्य एक ऐसे उपेक्षित समुदाय से है– जो समाज की मुख्यधारा से हाशिये पर धकेल दिया जाता है। ऐसे समुदाय के हितों की अनदेखी की जाती हैं और जिन्हें संसाधनों तक पहुंच सुनिश्चित करने तथा सामाजिक जीवन में सहभागिता हेतु संघर्ष करना पड़ता हैं। विकसित तथा विकासशील देशों में जलवायु परिवर्तन जनित वैश्विक पर्यावरणीय आपदाओं की सबसे पहले और सबसे अधिक मार हाशिये पर स्थित सामाजिक–आर्थिक रूप से पिछड़े तख्ते की समुदायों पर पड़ती है। भारत में, पर्यावरणीय चुनौतियाँ का दायरा विस्तृत हैं, जिसमें अस्तित्व के लिए एक छोर पर स्वच्छ जल और स्वच्छता व्यवस्था जैसी पर्यावरणीय सुविधाओं की गंभीर कमी से लेकर दूसरे छोर पर आधुनिक उपभोक्ता समाज द्वारा उत्पन्न खतरनाक अपशिष्टों से प्रदूषण शामिल हैं (साहनी, 2018)

1972 में स्टॉकहोम के मानव पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन के पश्चात भारत और अन्य देशों में पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने के लिए पर्यावरणीय नीतिया बनने लगी और इन नीतियों को लागू करने के लिए, सरकारों ने कुछ कानूनी ढांचे भी निर्धारित किए। भारत के संदर्भ में 1992 की प्रदूषण उपशमन पर राष्ट्रीय नीति से लेकर 2014 का स्वच्छ भारत मिशन ऐसी कुछ गिनीचुनी पर्यावरणीय नीतिया है जिनको निर्धारित करने के लिए पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम 1986 और उसके पश्चात कई कानून बनाये गए (गोगोई और सुमेश, 2023)। हालाँकि, ये पर्यावरण नीतियां हाशिए पर मौजूद आबादी के स्वास्थ्य पर होनेवाले हानिकारक प्रभावों की चर्चा नही करती रही और भारत के सार्वजनिक स्वास्थ्य की रक्षा करने में लगातार विफल हो गयी है। ये नीतियां एक तरफ विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच स्वास्थ्य परिणामों में अलग–अलग असमानताओं को पूरी तरह से अनदेखी करती हैं; तो दूसरी तरफ उनका मूल्यांकन करने में भी विफल रहती हैं (साहनी, 2018)।

विचार विमर्श :

नदियों में अपरिष्कृत वाहितमल (सीवेज) और औद्योगिक कूडे के अंधाधुंध प्रवाह के कारण 2008–15 के दौरान भारत में प्रदूषित नदियों की संख्या दुगनी से अधिक हो गई। पानी की गुणवत्ता में गिरावट इतनी गंभीर हो गई है, कि इन नदियों का पानी रोगाणु एवं जहरीले प्रदूषकों से संदूषित होने की वजह से हर दृष्टिसे अनुपयोगी हो गया है। भारत की आधी रुग्णता संदूषित जल से संबंधित है, जिससे अर्थव्यवस्था पर भारी लागत आती है। दशकों से, दुनिया भर में स्वास्थ्य

शोधकर्ताओं ने पर्यावरणीय अन्याय और स्वास्थ्य परिणामों की असमानताओं के बीच एक संबंध स्थापित किया है, खासकर गरीबों और हाशिए पर रहने वाले वर्गों के बीच, जिन्हें अक्सर सामाजिक रूप से 'संदूषित समुदायों' के रूप में वर्गीकृत किया जाता है (बुल्ले और पैलो, 2006)।

ये अधिकारहीन समुदाय, उन निर्णयों में पूर्ण भागीदारी के लिए कई संरचनात्मक बाधाओं या हकलाहट का सामना कर रहे हैं; जो उनके जीवन को प्रभावित करते हैं और जिनकी सभी किस्म के पर्यावरणीय जोखिमों के संपर्क में आने की अधिक संभावना है। इसके अलावा, स्वास्थ्य संबंधी शुरुआती पर्यावरणीय अध्ययनों में ज्यादातर पर्यावरणीय स्वास्थ्य असमानताओं में केवल एक ही विशेषता पर ध्यान किया गया भले ही स्वास्थ्य असमानताओं में कई सामाजिक कारकों का परस्परच्छेद (इंटरसेक्शन) हो। इसके अलावा, लाभकरी– सैल्यूटोजेनिक पहलुओं की उपस्थिति या अनुपस्थिति पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, अधिकांश पर्यावरण अनुसंधान ने विशेष रूप से पर्यावरण के रोगजनक घटकों की उपस्थिति या अनुपस्थिति पर ध्यान केंद्रित किया है (पियर्स और अन्य, 2010)।

दरअसल, भारत में पर्यावरण नीतियां अभी भी औपनिवेशिक प्रकृति की हैं और बड़े पारिस्थितिकी तंत्र के संधारणीय विकास में उनकी कोई रुचि नहीं है (गाडगील और गुहा, 1995)। गौरतलब है कि अनुसूचित जाति, छोटे बच्चों, महिलाओं, विकलांगों के उच्च प्रतिशत वाले और कम शहरीकृत जिलों में यह देख गया कि वे बिना शौचालयों के खराब आवास स्थितियों में और जहाँ की हवा में पीएम 2.5 प्रदूषक की मात्रा में निरंतर वृद्धि देखी गई है जहां पीएम 2.5 जैसे सूक्ष्म–कणिका वायु प्रदूषक की सांद्रता अंतर्राष्ट्रीय वायु गुणवत्ता मानक की सीमारेखा के कई गुना ऊपर देखी गई है (चक्रवर्ती और बसु, 2021)।

संकटजनक पर्यावरण में रहने वाले लोग हमेशा रुग्णता और मृत्यु दर के उच्च प्रादुर्भाव का अनुभव करते हैं। हाशिये पर रहनेवाले अधिकारहीन लोगों में स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच की कमी, आर्थिक संसाधनों की सीमित उपलब्धता और स्वास्थ्य केंद्रों तक भौगोलिक दुर्गमता के कारण उनके शरीर पर इन सभी कारकों का सामुहिक प्रभाव देखा जा सकता है। मुंबई के मिठी नदी के समीप या अन्य कई उपनगरों के नदी–नालों तथा मल निकास व्यवस्था के इर्दगिर्द झुग्गियों में रहने वाले समुदायों में अतिवर्षा जलमग्नता के दिनों में यह दुष्प्रभाव आसानी से देखे जा सकते है।

भारत में, किसान और कृषि मजदूर जैसे 'पारिस्थितिकी तंत्र (इकोसिस्टम) के लोग' अपनी बुनियादी भौतिक जरूरतों को पूरा करने के लिए अपने इलाके के प्राकृतिक वातावरण पर निर्भर हैं। इन लोगों का 'जीवमंडल (बायोस्फियर) के लोगों' याने बेहतर–संपन्न शहरी निवासियों द्वारा बड़े पैमाने पर औपनिवेशिक तरीके से शोषण किया गया है (गाडगिल और गुहा, 1995)। जीवमंडल के लोगों के पास पूरे वैश्विक जीवमंडल की संपत्ति का उपयोग करने का राजनीतिक और आर्थिक अधिकार है और इसके बावजूद ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यावरणीय गिरावट के नकारात्मक प्रभावों के प्रति वे असंवेदनशील है। इसके अलावा पारिस्थितिकी तंत्र के लोगों द्वारा सामना किए जाने वाले कई संघर्षों और कठिनाईयों के प्रति वे सहानुभूति नहीं रखते हैं।

बढ़ते पर्यावरणीय अन्याय और असमानताओं ने पारिस्थितिकी तंत्र के लोगों के पारंपरिक आजीविका पैटर्न को काफी हद तक नष्ट कर दिया है, जो अपने मूल स्थान से पलायन करने और निर्माण कार्य या अन्य अकुशल कार्यों में शामिल होने के लिए मजबूर हैं। गाडगिल और गुहा (1995) इन लोगों को 'पारिस्थितिक शरणार्थी' कहते हैं। ये पारिस्थितिकी तंत्र के लोग और पारिस्थितिक शरणार्थी ज्यादातर देशज, आदिवासी और जनजातीय लोग हैं जो अब विभिन्न प्रकार के पर्यावरणीय अन्याय के प्रति अधिक संवेदनशील हैं। सार्वजनिक या निजी कंपनियों के स्वामित्व वाली भूमि पर अवैध निर्माण करके रहने वाले पारिस्थितिक

शरणार्थी पानी, सफाई व्यवस्था और बिजली तक औपचारिक पहुंच से वंचित रहते है। उपरसे बारंबार घटने वाली जलवायु परिवर्तन प्रेरित आपदाओं का खामयाजा भी हर कही इन्हीं समुदायों को ही भुगतना पड़ता है।

भारत में 45 मिलियन लोग जलवायु आपदाओं के कारण 2050 तक भारत में जलवायु–प्रेरित विस्थापन और स्थानान्तरण करने के लिए मजबूर होंगे, जो वर्तमान आंकडों से तीन गुना अधिक है (रहमान, 2022)। उपजाऊ मिट्टी की बढ़ती लवणता, बार–बार आने वाले चक्रवातों और बाढ़ ने कृषिकार्य चुनौतीपूर्ण बना दिया है, ऐसे हालात में आजीविका की तलाश में ये शरणार्थी शहरों एवं उपनगरों की तरफ पलायन करते हैं। हाशिए पर रहने वाले सामाजिक और भौगोलिक समूहों जैसे कि एससी, एसटी और झुग्गी–झोपड़ी में रहने वाले लोग अक्सर पारिस्थितिक रूप से सुभेद्य स्थानों में रहते हैं, चाहे वह अचानक बाढ़, भूस्खलन या भूकंप की प्राकृतिक सुभेद्यता हों या औद्योगिक अपशिष्टों के प्रवाह के नीचे रहने की सुभेद्यता हों, पीड़ित अक्सर सामाजिक–आर्थिक वर्णक्रम के सबसे निचले हिस्से से आते हैं। भारत में, 95 प्रतिशत से अधिक इलेक्ट्रॉनिक – कूड़ा का उपचार और प्रसंस्करण देश की अधिकांश शहरी मलिन बस्तियों में किया जाता है, जहां अप्रशिक्षित कर्मचारी व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरणों के बिना खतरनाक प्रक्रियाओं को अंजाम देते हैं। ऐसे हालात में स्वास्थ्य संबंधी खतरे ज्यादातर निचले स्तर के श्रमिकों में पाए गए, जो ज्यादातर निचली जाति और भारतीय समाज के हाशिए पर रहने वाले वर्गों से संबंधित हैं (रेग्मी और अन्य 2019)।

सार्वजनिक स्वास्थ्य अन्याय मुख्य रूप से परस्परच्छेदन (इंटरसेक्शनल) न्याय दृष्टिकोण के अनुसार, आर्थिक कुवितरण, सांस्कृतिक गलत पहचान और राजनीतिक मिथ्याप्रस्तुति से उत्पन्न होता है, इसलिए आर्थिक पुनर्वितरण, सांस्कृतिक मान्यता और राजनीतिक प्रतिनिधित्व को एकीकृत करने से न्यायप्राप्ति हो सकती है। इसके अलावा पर्यावरण नीतियों के प्रति एक व्युपनिवेशीकरणवादी (decolonization) दृष्टिकोण सरकार और देशज (इंडिजीनस) समुदायों के बीच अधिकार या शक्ति असंतुलन को बदल सकता है। इस असंतुलन को बदलकर, एक व्युपनिवेशीकरणवादी पर्यावरण नीति भारत में देशज जनजातियों और अन्य हाशिए पर मौजूद आबादी के बीच भूमि अधिकारों और आधिपत्य या प्रभुत्व को बहाल करेगी। इससे हमें समावेशी पर्यावरण नीति तैयार करने और लागू करने में देशज लोगों की समस्याओं तथा जरूरतों को समझने में मदद मिलेगी (गोगोई और सुमेश, 2023)।

निष्कर्ष :

गहराते जलवायु संकट और पर्यावरणीय स्वास्थ्य अन्याय और असमानताओं की पृष्ठभूमि में वर्तमान पर्यावरण नीतियां भारत और अन्य देशों में हाशिए पर रहने वाले समुदायों के स्वास्थ्य की रक्षा करने में विफल रही हैं। इस परिप्रेक्ष्य इन उपेक्षित समुदायों के स्वास्थ्य, आजीविका और बड़े पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा के लिए समावेशी पर्यावरण नीतियों का संशोधन, निर्माण और कार्यान्वयन यह वक्त की मांग है। नीति निर्माताओंने उपनिवेशवादी नैतिकता और दृष्टिकोण से ऊपर उठकर हाशिए पर रहने वाले समूहों के लिए पर्यावरण संबंधी स्वास्थ्य मुद्दों पर गौर करना जरूरी है और नवीन अनुसंधान और नीति प्रतिमान तैयार करने में सामाजिक वैज्ञानिकों को शामिल करना चाहिए। व्युपनिवेशी–करणवादी दृष्टिकोण के तहत आर्थिक पुनर्वितरण, सांस्कृतिक मान्यता और राजनीतिक प्रतिनिधित्व के एकत्रीकरण द्वारा भारत में एक समावेशी पर्यावरण नीति निर्माण और कार्यान्वयन की आवश्यकता है–जो हाशिये पर स्थित समुदायों को भूमि अधिकार एवं संप्रभुता और उसके फलस्वरूप पर्यावरणीय न्याय बहाल करेगी।

– डॉ सुभाष भिमराव दोंदे
डेक्कन एज्युकेशन सोसायटी, पुणे
संलग्न जंतु विज्ञान प्रभाग, किर्ती कॉलेज (स्वायत्त),
दादर (प.) मुंबई – 400 028.
मोबा. 9869556607

संदर्भ :

1. **Brulle R J and D N Pellow** (2006) *Annual Review of Public Health*, Vol 27, pp 103–24, https://www.annualreviews.org/doi/10.1146/annurev.publhealth.27.021405.102124
2. **Chakraborty, J and P Basu** (2021) *International Journal of Environmental Research and Public Health,* Vol 18, No 304, pp 1–14.
3. **Gadgil, Madhav and Guha Ramchandra** (1995) *Ecology and Equity: The Use and Abuse of Nature in Contemporary India*, London and New York: Routledge.
4. **Gogoi Nitish, and Sumesh S.S**. (29th Jul; 2023) *Economic & Political Weekly* Vol. 58, Issue No. 30, https://www.epw.in/engage/article/environmental-injustice-and-public-health-india
5. **Pearce, J R, *et al*** (2010) *Transactions of the Institute of British Geographers*, Vol 35, No 4, pp 522–39, https://www.jstor.org/stable/40891006
6. **Rahman Azera Parveen** (2022) *Mongabay India* https://india.mongabay.com/2022/03/indias-women-and-children-highly-vulnerable-to-climate-change-yet-missing-in-climate-policies/?amp=1
7. **Regmi P R, & *et al*.** (2019): *International Journal of Environmental Research and Public Health, V*ol 16, No 19, pp 1–13. https://pubmed.ncbi.nlm.nih.gov/31569445/
8. **Sawhney, Aparna** (10th 2018): *East Asia Forum,* https://www.eastasiaforum.org/2018/10/10/compliance-dilemmas-in-indian-environmental-policy/.

कवि निराला की कविताओं में राष्ट्रीय जागरण

– डॉ. दीपक कुमार

छायावाद के स्तम्भ कवि माने जाने वाले कवि निराला का भारतीय राष्ट्रीय जागरण में महत्त्वपूर्ण योगदान है। आधुनिक काव्य में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा राष्ट्रीयता का जो बीजारोपण किया गया आगे चलकर उसे छायावादी कवि निराला ने बखूबी निभाया। उन्होंने 'तुलसीदास', 'कुकुरमुता', 'वह तोड़ती पत्थर', 'राम की शक्ति पूजा', 'दिल्ली' व 'शिवाजी का पत्र' आदि दीर्घ कविताओं के माध्यम से देशवासियों में एक नई चेतना व ऊर्जा का संचार किया। अपनी जन्मभूमि के प्रति उनमें अगाध श्रद्धा व प्रेम भाव था जिसे उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से प्रकट किया है। उनकी रचनाओं में विषय की विविधता तो है ही, भाषा में भी नयापन मिलता है। धर्म, दर्शन, अध्यात्म, प्रेम, अभावग्रस्त जीवन, आदि को समग्रता मेँ व्याख्यायित करती उनकी कविताएँ पाठकों पर एक अमिट छाप छोड़ती हैं।

सन् 1920 से 1947 की देश परिस्थितियाँ व जनता की स्वाधीनता प्राप्ति की आकांक्षा उनके काव्य में तीव्रता से अभिव्यक्त हुई है। निराला भावों के कवि है। किसी की पीड़ा देख हृदय द्रवित हो या फिर प्रेयसी के प्रेम में आकंठ डूबा मन हो, निराला के काव्य में अपने चरम रूप

में विद्यमान है। भारतीयों को सिंह तथा भारत को सिंह का मांद मानकर देशवासियों को पराधीनता की निद्रा से जागृत करती उनकी कविता हुंकारती है :–

''शेरों की मांद में
आया है आज स्यार
जाओ फिर एक बार'',[1]

भारतवासियों को पराधीनता में बंधा देखकर निराला के मन में अनेक भाव उत्पन्न होते हैं। वे कभी तो पराधीनता से समझौता करने वालों पर क्रुद्ध होते हैं तो कभी देशवासियों को अपने देश के गौरवपूर्ण अतीत का स्मरण कराते हुए उनके सोये हुए स्वाभिमान को जगाने का प्रयास करते हैं। वे मानते है जो व्यक्ति स्वयं के अधिकारों के लिए लड़ता है विजयश्री भी उसी को प्राप्त होती है। वीर वर्तमान की दुर्दशा पर क्षोभ व्यक्त नहीं करते अपितु सत्य और अहिंसा के बल पर आगे बढ़ते हैं। वे लिखते हैं।

''योग्य जन जीता है।
पश्चिम उक्ति नहीं
गीता है, गीता है
स्मरण करो बार–बार
जागो फिर एक बार।''[2]

निराला का युग बोध बहुत गहरा था। उनकी कविता में तिलमिला देने वाले व्यंग्य भरे पड़े हैं। देश की दयनीय अवस्था का जो चित्र निराला ने प्रस्तुत किया है वह अन्यत्र दुर्लभ है। उनके व्यक्तिगत जीवन का संघर्ष सामाजिक रूप ग्रहण कर साहित्य में विषय वस्तु बन कलात्मक ढंग से अभिव्यक्त हुआ है। 'वह तोड़ती पत्थर' कविता में कवि भरी दोपहर में पत्थर तोड़ने वाली मजदूरिन का बड़ा हृदय विदारक चित्र प्रस्तुत करता है, जो सीधा तत्कालीन राजव्यवस्था पर करारी चोट करता है। मजदूर कठिन परिश्रम कर अमीरों के लिए बड़े–बड़े महल बनाता है, किंतु उन महलों व पेडों की छाया भी उसे उपलब्ध नहीं है–

''कोई न छायादार
पेड वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार
श्याम तन, भर बंधा यौवन
नत नयन, प्रिय–कर्म–रत– मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार–बार प्रहार
सामने तरू मालिका अट्टालिका प्राकार''[3]

निराला समाज में दो वर्ग मानते हैं एक पूंजीपति और दूसरा मजदूर वर्ग। मजदूर सदा अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए पूंजीपति से संघर्षरत रहता है। निराला के काव्य में शोषित–पीड़ित के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की गई है। वे सामाजिक आर्थिक, राष्ट्रीय अथवा अन्य किसी दबाव को स्वीकार नहीं करते हैं। वे शोषक व्यवस्था को नष्ट कर देना चाहते हैं। डॉ. राम विलास शर्मा इस संबंध में लिखते हैं "निराला यह नहीं मानते थे कि राष्ट्रीयता की भावना अंग्रेजी राज की देन है।'' अन्याय होता देख वह बादलों का आह्वान है। बादल को उन्होंने क्रांति का प्रतीक माना। वे मानते हैं कि समाज में क्रांति होने से सदा गरीब, शोषित व मजदूर वर्ग को ही फायदा होता है। अतः कवि 'बादलराग' कविता मेँ लिखता है–

''हंसते हैं छोटे पौधे लघुभार
हिल–हिल खिल–खिल हाथ हिलाते
तुझे बुलाते
विप्लव रव से छोटे ही हैं शोभा पाते"[4]

निराला ने देश की तत्कालीन परिस्थितियों से प्रभावित होकर सन् 1936 'राम की शक्ति पूजा' कविता लिखी जिसमें राम का द्वन्द्व पूरी भारतीय जनता के द्वन्द्व के रूप में चित्रित किया गया है। भारतीय जनमानस राम को अपना आदर्श मानता है। अतः क्रांति के लिए राम के आदर्शात्मक अनुकरण के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं। क्रांति का सुखद परिणाम तुरंत प्राप्त नहीं होता इसके लिए अथक परिश्रम व बलिदान देना पड़ता है। अन्यायी पक्ष जब हावी होता दिखाई पड़ता है तो मन में हार–जीत को लेकर अन्तर्दवन्द्व पैदा हो जाता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति का मनोबल ही उसका सबसे बड़ा आश्रय होता है। राम–रावण युद्ध में रावण को अपने ऊपर हावी होता देखकर राम चिन्तित हो उठते हैं, किंतु अपनी चिन्तन शक्ति एवं आत्मबल से वे इसका उपाय

खोज लेते हैं और माँ शक्ति की आराधना कर उनसे विजय का आशीर्वाद प्राप्त कर लेते हैं। राम के माध्यम से निराला समूची भारतीय जनता को यह विश्वास दिलाना चाहते थे कि अंग्रेज कितने ही बलशाली क्यों न हों किंतु व्यक्ति के अथक प्रयासों व आत्मिक शक्ति से उनको देश से बाहर निकाला जा सकता है। 1936 का दौर अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में दूसरे विश्व युद्ध की भूमिका का समय था जबकि साहित्य में प्रगतिवाद का दौर था। कवि युद्ध की विभीषिका और अंग्रेजी शोषण से आक्रांत मन को विजय का संकल्प दिलाता है। 'राम की शक्ति पूजा' कविता की अन्तिम पंक्तियाँ यही संदेश देती हैं

'' होगी जय होगी जय हे पुरुषोत्तम नवीन
कह महाशक्ति राम के वन्दन में हुई लीन।''[6]

'राम की शक्ति पूजा' कविता का आरंभ जिस भव्यता से किया गया है वह अद्भुत है। संस्कृत निष्ठ शब्दावली के प्रयोग तथा वाणी में ओज गुण के समावेश से कविता बेजोड़ बन पड़ी है। इस संदर्भ में डॉ. नंदकिशोर नवल लिखते हैं ''उदात्तता के अनुरूप ही इस कविता का ढांचा है, जो ऊपर से सरल लेकिन भीतर से जटिल है, इससे इसकी सरलता में निहित जटिलता स्पष्ट हो जाती है।''[7]

निराला ने अपनी कविता 'छत्रपति शिवाजी का पत्र' में शिवाजी के आदर्श चरित्र और ओजमयी वाणी से भारतीयों को अपनी परतन्त्रता के प्रति जागरूक किया है। छत्रपति शिवाजी जिस प्रकार जयसिंह को धिक्कारते और समझाते हैं उसे पढकर भला कौन जागृत नहीं होगा। युद्ध का सीधा वर्णन किये बिना बिम्बों की सहायता से मुक्त छन्द के प्रवाह और ध्वनि के आवर्तों के निराला युद्ध भूमि और संघर्ष का चित्र उपस्थित कर देते वे शत्रुओं को किस तरह फटकारते हैं, इसका उदाहरण देखिए

''शत्रुओं के खून से धो सके यदि एक भी तुम माँ का दाग
निर्जन हो जाओ अमर कहलाओगे।''[8]

कुकुरमत्ता कविता में कवि कुकुरमुत्ता यानि गरीब शोषित, मजदूर के माध्यम से गुलाब यानि अमीर, पूंजी पति, शोषक को फटकारते हुए कहता है कि तुम्हारा सौन्दर्य व चमक हमारे कारण ही है। हमारा शोषण करके ही तू इस ऊँचाई तक पहुंचा है, अतः इतना इठलाने की आवश्यकता नहीं है, वे लिखते हैं –

''अबे ! सुब बे गुलाब
भूल मत जो पाई खुशबू रंगोआब
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट
डाल पर इतराता है कैपिटलिस्ट।''

सामाजिक रूढियाँ भारत की प्रगति में सदा बाधक रही हैं। बाल–विवाह प्रथा, नरबलि व पशुबलि प्रथा, सती प्रथा व विधवा का नारकीय जीवन व उसकी पीड़ा का बड़ा संवेदनात्मक चित्रण निराला अपनी कविताओं में करते हैं। समाज को अन्धविश्वासों की कारा से निकालने का प्रयास निराला जी ने अपने काव्य के माध्यम से किया है। 'सरोज स्मृति' कविता में वे पुत्री सरोज के विवाह के समय सामाजिक बंधनों को तोड़ने की बात करते हैं। 'भिक्षुक कविता' में एक गरीब भिखारी की दयनीय अवस्था का चित्रण करते हैं तो 'विधवा' कविता में विधवा जीवन की पीड़ा का वर्णन करते हुए उसे मन्दिर की पूजा के समान शांत मानते हुए लिखते हैं–

''वह इष्टदेव के मन्दिर की पूजा सी
वह दीपशिखा सी शान्त भाव में लीन।''

संक्षेप में निराला का काव्य विविधताओं का भंडार है। उन्होंने प्रगतिवाद, राष्ट्रीयता, रहस्यवाद, सामाजिकता आदि विविध विषयों पर अपनी लेखनी चलाई है। भारतीय साहित्य में ऐसे रचनाकार बहुत कम हुए हैं, जिनकी रचनाधर्मिता से समाज को गतिशीलता मिली हो। आधुनिक काव्य में भाव और शिल्प के दृष्टिकोण से उनका योगदान सदैव अविस्मरणीय रहेगा। निराला के साहित्य का समग्रता में मूल्यांकन करते हुए डॉ. रामविलास शर्मा लिखते है ''राष्ट्र के प्रति प्रेम की भावना निराला जी में कूट–कूट कर भरी हुई थी। दूसरे निराला ने स्वाभाविक रूप से मानवतावाद या मानवमात्र की स्वतंत्रता का समर्थन किया है।''[9]

– डॉ. दीपक कुमार
सहायक प्रोफेसर हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय भेरियां, पेहवा,
कुरुक्षेत्र (हरियाणा) मो. 8708861229

संदर्भ :
1. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला रू रागविराग, पृ. 58
2. वही, पृ. 59
3. वही, पृ. 119
4. वही, पृ. 123
5. वही, पृ. 58
6. वही, पृ. 127
7. नंदकिशोर नवल–निराला कृति से साक्षात्कार, पृ. 239
8. सूर्यप्रसाद दीक्षित–निराला – समग्र, पृ. 129
9. रामविलास शर्मा–परम्परा का मूल्यांकन, पृ. 45

थेरीगाथा : नारी स्वतंत्रता इतिहास के आइने से

– डॉ. सीमा राठौर

प्रस्तावना :

''थेरी गाथा'' डॉ. विमलकीर्ति अनुदित और सम्पादित हिन्दी भाषा का अति महत्वपूर्ण ग्रंथ है । 'थेरी गाथा' मूलतः बौद्ध त्रिपटिक साहित्य पाली भाषा में लिखित ग्रंथ है। इस रचना में भगवान बुद्ध की समकालीन भिक्षुणी (भिक्खुनी–पाली) के जीवनानुभव है। ''श्रीमद् भागवत महापुराण और श्री नरसिंहपुर के अनुसार भगवान बुद्ध आज से लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व हुए हैं । बुद्ध का जन्म नेपाल के लुंबिनी में इ. स. पूर्व 563 को हुआ माना जा रहा है। 80 वर्ष की यशस्वी आयु के धनी बुद्ध ने भारत के बोध गया में ज्ञान प्राप्त करने के बाद उसी बोधि वृक्ष के नीचे देह त्याग दिया। बोध गया, बिहार के 'गया' जिले में स्थित एक नगर है। क्षत्रिय शाक्य कुल में जन्में गौतम बुद्ध कठोर आत्म अनुशासन के आग्रही, मृत्यु पर्यन्त अपने दोषों पर विजय प्राप्त करने के लिए और सकारात्मक क्षमताओं के विकास हेतु 'ध्यान' मार्ग अपनाया और प्रशस्त भी किया। ध्यान और करुणा के आग्रही गौतम बुद्ध अपने कर्मों के माध्यम से भगवान बुद्ध के रूप में विश्वविख्यात है। भगवान बुद्ध का समय अर्थात् नारी स्वतंत्रता के विरोध का समय था।'' (bh.m.wikipedia.org)

इतिहास में बुद्ध के समय में नारी उत्पीडित थी। नारी के साथ दर्दनाक घटनाएँ और दासत्व समाज में सर्व व्याप्त था। ऐसे समय में भगवान बुद्ध की प्रेरणा तत्कालीन स्त्रियों के लिए आशीर्वाद सिद्ध हुई। बुद्ध के अमृत वचनों से प्रभावित स्त्रियाँ बुद्ध द्वारा निर्मित संघ में प्रवज्या (दिक्षा) प्राप्त करनेवाली स्त्रियाँ 'थेरी' कहलाती थी। इनमें से 73 विद्वान प्रवज्या प्राप्त भिक्षुणियों (थेरी) के जीवनानुभवों एवं नारी स्वतंत्रता के विचारों को 'थेरी गाथा' ग्रंथ में महत्वपूर्ण स्थान दिया है। ''इस ग्रंथ को प्रमुख 16 वर्ग (भाग) में बाँटा गया है। ज्ञान और अध्यात्म पर पुरुषों का एकाधिकार था। ऐसे समय में गौतम बुद्ध एवं उनके अनुयायिओं के द्वारा भिक्षुणी संघ की स्थापना 'कपिलवस्तु' में की। बौद्ध भिक्षुणी संघ की स्थापना का प्रस्ताव भगवान बुद्ध की पालक माता महाप्रजावती गौतमी और यशोधरा के द्वारा रखा गया था।'' (थेरी गाथा – भूमिका)

थेरीगाथा : नारी स्वतंत्रता इतिहास के आइने से

'थेरीगाथा' में बौद्ध भिक्षुणियों (भिक्खुणियों) के जीवनानुभव और भावनापूर्ण आत्मिक उद्‌गार है। इन भिक्षुणियों में मूल्यनिष्ठ अनुशासन और स्वानुभूतियाँ भरपूर है। जो, इतिहास से लेकर आज की नारियों के लिए स्वतंत्रता की भूमि तैयार करती है। अतः 'थेरीगाथा' आज भी प्रासंगिक है। 'थेरीगाथा' में चित्रित स्त्रियाँ समाज के अलग–अलग वर्ग, जाति–समूह, जगहों से है पर वैचारिक रूप से एक है। इस ग्रंथ में नारियों (बौद्ध भिक्षुणियों) की पीडा–वेदना के साथ मूल्यनिष्ठ विचारों का अंकन है। वर्तमान पीढी में इस ग्रंथ और विचारों का भरपूर सम्मान है। 'थेरीगाथा' ग्रंथ मूलतः पालि भाषा में शान्ति स्वरूप द्वारा लिखित है। इसका हिन्दी में अनुवाद बौद्ध उपासक भरतसिंह उपाध्यायजी ने तैयार किया।

अनुवाद इतना सरल भाषा में हुआ है कि सामान्य वर्ग और अल्प शिक्षित भी इसका रसास्वाद आसानी से ले सकते हैं ।

बौद्ध ग्रंथ 'त्रिपिटक' के निकाय ग्रंथों में 'थेरीगाथा' खुदक निकाय के पंद्रह ग्रंथ समूह में से क्रम संख्या नौ पर आता है । भगवान बुद्ध विश्व के पहले महामानुष थे जिन्होंने, स्त्री जाति के प्रति सम्मान एवं समानता की भावना प्रकट करते हुए 'धम्म' (धर्म का मार्ग अर्थात् धारण करना, धर्म को धारण करना अथवा करने वाला मार्ग) के समक्ष उन्हें पुरुषों के बराबर समझा और धर्म के क्षेत्र में सर्वप्रथम 'भिक्खुणी' संघ की स्थापना की। बुद्ध से पूर्व महावीर भगवान और जैन धर्म समाज में प्रचलित थे। पर उस समय स्त्रियों को धर्म मार्ग में अर्हत पद (योग्य पद) दिलाने का श्रेय भगवान बुद्ध को जाता है।

स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्रता के बाद आज इक्कीसवीं सदी में भारत विकसित देश बनने जा रहा है। विकास,

विज्ञान, तकनीक आविष्कार के चरम पर है। देश, समाज दिन–प्रतिदिन बदल रहा है। जमीन से लेकर आसमान तक के बदलावों को हम मिलकर स्वीकार कर रहे है। समाज की आधी आबादी स्त्री जगत पर युगों से स्वतंत्रता और समानता की बात करते आ रहे है। वैचारिक और क्रियात्मक बदलाव आज भी स्त्री की माँग रही है। क्यो? इसका उत्तर तत्कालीन समय में भगवान बुद्ध ने दे दिया था। लेकिन आज हम भूल चूके हैं इसीलिए इन विचारों का पुनरावर्तन आज प्रासंगिक है। 'थेरीगाथा' में व्यक्त जीवन और समस्याएँ आज भी समाज में है। इसीलिए भी इस संदर्भ में बौद्ध कार्य एवं विचार आज हमारी प्रेरणा है। 'थेरीगाथा' ग्रंथ का उद्देश्य है–''यह पढकर नारी समाज जागृत हो... अभ्यास से नारियों को स्वयं पर विश्वास आये कि वह पुरुषों के समान है। अध्यात्मिक क्षेत्र में परिश्रम करके वे भी अर्हत (योग्य) बन निर्वाण (मोक्ष) प्राप्त कर सकती है।'' (थेरीगाथा एक मत–धर्मकीर्ति)

नारी को पशुवत, पैरों की जूती, बच्चे पैदा करने वाली मशीन, परिवार की मात्र सेवक और पाप योनि, विशेष मंदिरों में प्रवेश नहीं जैसी समाज की निम्नतर मानसिकता को तोडकर बुद्ध ने स्त्री को सभी जगह समान दर्जा देकर सामाजिक क्रान्ति का सूत्रपात किया है। महाप्रजावती गौतमी, यशोधरा और प्रकृति जैसी मेहतरानियों (चाण्डालकन्या) को बुद्ध ने संघ में सभी जगह समान अधिकार प्रदान किये। थेरीगाथा की भाँति 'थेरगाथा' भी अति प्रचलित ग्रंथ है यह दोनों ग्रंथ नर–नारी तथा मानवीय समानता के पोषक ग्रंथ है ।

'थेरीगाथा' में समाहित सचित्र 73 संघ में दीक्षित भिक्खुणियों के जीवनानुभव काव्यमय गाथा (सन्देश) है जो कालजयी सन्देश है। यहाँ 'थेरियाँ' अपने पूर्व जीवन को बताने में संकोच न करते हुए वर्तमान से बेहतर भविष्य की कामना करते–करते मोक्ष के उद्देश्य को प्राप्त करती है। शास्ता (शिक्षक, गुरु, मार्गदर्शक) का उपदेश थेरियों के लिए सर्वोच्च है ।

1. सावत्थी के एक दरिद्र परिवार में जन्मी भिक्खुणी सुमंगलमाता कहती है कि–

''अहो ! मैं मुक्त नारी ! मेरी मुक्ति कितनी धन्य है !
पहले मैं मूसल लेकर धान कूटा करती थी
आज उससे मुक्त हुई
मेरी दरिद्रावस्था के वे छोटे–छोटे बर्तन !
जिनके बीच में मैली कुचौली बैठती थी
और मेरा निर्लज्ज पति मुझे उन छातों से भी तुच्छ समझता था
जिन्हें वह अपनी जीविका के लिए बनाता था
अब उस जीवन की आसिक्तयों और मलों को मैंने छोड दिया ।
मैं आज वृक्ष मूलों में ध्यान करती हुई जीवन–यापन करती हूँ ।
अहो ! अब मैं कितनी सुखी हूँ !.....''
(थेरीगाथाः डॉ. विमलकीर्ति–पृ. 21)

उपर्युक्त मनःस्थिति आज भी पुरुषों में है इसीलिए यह संदर्भ प्रासंगिक है। आजीवन मैली–कुचौली जिन्दगी जीनेवाली स्त्री को समानता, सत्कार और सुख भी चाहिए । इन थेरियों में दृढ आशावाद है, परमशान्ति की कामना है ।

2. धर्म के नाम पर पाखण्ड रचनेवाले समाज को दासी पुत्री (श्रावस्ती के अनाथपिण्डिक के घर की दासी) पुण्णिका विशुद्ध मार्ग प्रशस्त करते हुए कहती है–

''स्नान–शुद्धि से पाप मुक्ति होती है
.......यह तो अज्ञानी, मूर्ख के प्रति उपदेश है ।
यदि जल से ही शुद्ध होती,
तब तो मेंढक, कछुए, जल के सर्प,
मगर और अन्य जलचरों का स्वर्ग–गमन निश्चित है !''
(थेरीगाथाः विमलकीर्ति– पृ. 21)

हमारे घरों में आज भी यह मान्यता प्रचलित है कि अबाल–वृद्ध स्नानादि करके ही रसोई घर में प्रवेश करेंगे। जहाँ घर, रसोई, बैठक, और शयन खण्ड एक कमरे में अथवा, एक ही छोटी जगह या झोपडी में है तो वह क्या करें ? ऐसी मान्यताओं को तोडकर आंतरिक शुद्धता की ओर हमें सोचना चाहिए। आंतरिक सौंदर्य और स्वच्छता आज अत्यंत प्रासंगिक है।

3. अधूरा ज्ञान किस काम का ? वैशाली नगर के लिच्छवी राज–कूल में जन्मी भिक्खुणी जयन्ती ज्ञान और जन कल्याण के मार्ग से मोक्ष प्राप्त करती है। वह मानती है कि जिस मार्ग पर मैं चल रही हूँ उस मार्ग के सभी सात अंगों को मैंने भावनात्मक रूप से अभ्यास किया है इसीलिए इस मार्ग पर अचलित विजय प्राप्त करूँगी। कहती है–

''निर्वाण प्राप्ति के मार्ग स्वरूप ये जो बोधी के सात अंग (बौद्ध दर्शन के सात अंग–स्मृति, धर्म, विषय, वीर्य, प्रीति, प्रश्नविध (प्रश्नोत्तर की विधि), समाधि, उपेक्षा) है । भगवान बुद्ध के उपदेश के अनुसार मैंने उन सब की भावना अर्थात्

अभ्यास किया है।'' (थेरीगाथा– विमलकीर्ति–पृ. 61)

अधूरा ज्ञान पाप का (निष्फलता) का मूल है। इसलिए आज हमें ज्ञान प्राप्ति के क्षेत्र में समानता से आगे बढ़ना चाहिए। अपने अधिकारों के प्रति जागृत रहना हमारा (स्त्रियों का) दायित्व है ।

अड्कासी (अर्धकाशी) भिक्खुणी जन्मे वाराणसी के सेठ परिवार की पुत्री थी। परिवार के पाखण्डी जीवन व्यवहार और मिथ्या मान्यताओं से त्रस्त वैभवशाली जीवन छोड़कर राजगृह में वैश्या बन गई । काशी राज्य की आय एक दिन की एक हजार कार्षायण थी और इस वैश्या की एक रात की आय भी उतनी ही थी । सर्वोच्च सुन्दरता की धनी अड्कासी भगवान बुद्ध के विचारों को सुनते ही यह सब छोड़कर भिक्षुणी बन जाती है। वह कहती है कि– ''मेरा सारा सौंदर्य आज मेरे लिए घृणा का कारण हुआ है... मैं उसके मोह से मुक्त होकर अब विरक्त हो गई हूँ। मृत्यु और पुनर्जन्म के चक्कर में मुझे अब और घूमना नहीं है। मैंने तीनों विधाओं–पूर्व जीवन की स्मृति, प्राणियों की सुगति और दुर्गती और चित–मलों (आश्रयों) के विनाश का ज्ञान प्राप्त कर लिया है।'' (थेरीगाथा–विमलकीर्ति– पृ. 65)

अर्थात् सौंदर्य नाशवंत है ज्ञान मोक्ष का मार्ग है। हमें नाशवंत चीजों के प्रति आसक्ति रख समय व्यय नहीं करना चाहिए। उत्तम लक्ष्य की प्राप्ति हेतु उत्तमोत्तम मार्ग चुनना चाहिए ।

इसके अतिरिक्त अन्य कई उदाहरण थेरीगाथा में मौजूद है, यह ग्रंथ प्रेरणास्त्रोत है। निष्कर्षतः थेरीगाथा के मूल्यनिष्ठ विचार आज भी प्रासंगिक है ।

– **डॉ. सीमा राठौर**
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
सरदार पटेल विश्वविद्यालय
वल्लभ विद्यानगर–388120 (गुजरात)
मो. 98247 16158

संदर्भ :

1. bh-m-wikipedia-org
2. थेरीगाथा – डॉ. विमलकीर्ति
3. चर्चा–विचार – डॉ. जसबीर चावला–पंजाब ।

Integration of Happiness Curriculum and English Language Teaching

- **Manju** (Ph. D. Scholar)
- **Dr. R. Thangam** (Research Guide)

Abstract

Every child in the world is born as a curious being and a seeker of justice and happiness. The ultimate desire of human beings is to seek happiness and understanding of their existential reality. The world is facing problems not just of global warming, terrorism, population explosion etc. but also at domestic fronts in the form of deterioration of relations among the members of the family. In order to address these kinds of issues, the government of NCT Delhi has started the world's largest mindset curriculum, the "Happiness Curriculum " for more than 8 lakh students, studying in 1000+ schools where 20,000 teachers are catering for the needs of the students on a daily basis. The primary purpose of this curriculum is the humanisation of education. Though the happiness curriculum has been introduced as a subject in isolation, the content of the happiness curriculum is integrated with language development and other academic subjects to expose the students towards the understanding of existential reality and come up with a solution to prevalent problems. The present paper is in the context of the government school education in Delhi

Keywords : Happiness Curri-culum, Mindfulness, Experiential learning, Integration with the English language.

Integration of Happiness Curri-culum and English Language Teaching

Happiness is a reflection of one's state of mind and involves experiencing meaningful joys with a sense of contentment. Despite being a result of mindset, attitude and personal beliefs, external factors too can be responsible in the

form of success, relationship and possessions for the happiness of few. The question arises: can happiness be taught? and can education help in perceiving an idea and be in that state of mind for a long period? Various studies have proven that education can help in the following domains of influence :

- **Personal Growth**
- **Professional growth**
- **Social Growth**

No doubt, receiving education and acquiring new skills might be a personal experience but it does more than its textbook definition and helps in earning to live a convenient and comfortable life. But convenience and happiness are two distinct aspects. The need of the hour is developing and inculcating habits and insights to maintain one's happiness. The modern world is full of insecurity, war, poverty and various other global issues resulting in anxiety, sadness and dissatisfaction. So the on us lies on the shoulders of the education system. Simultaneously a growing prominence of maintaining humanity and brotherhood among the masses through education is observed across the globe.

In order to address these issues many education systems across the globe have integrated social-emotional learning (SEL) into their curricula, which align with SDG4 commitment of the UNESCO. The SEL focuses on developing students' emotional intelligence, self-awareness, ability to cope with stress, interpersonal skills, and responsible decision-making. The United States introduced the `Collaborative for Academic, Social, and Emotional Learning` (CASEL) framework, which provides guidelines and resources for schools to implement SEL practices. In order to address such global and local issues the Govt of NCT of Delhi has introduced the world's first well structured `Happiness Curriculum` for all students at elementary level. This curriculum focusses on inculcating Universal Human Values (Chetna Vikas Moolya Shiksha) at an early age.

The 'Happiness Curriculum' of the GNCTD is a unique and the largest experiment towards humanisation of education. It caters to the emotional needs and social issues of almost 8,00,000 students through 20000 teachers across 1000 schools of Delhi, India launched by Rev. Dalai Lama in 2018. The curriculum is designed to help students cope with stress and enhance their emotional intelligence, build positive relationships, and develop a sense of purpose and fulfilment in their foundation years for progressive mindset in coming life. The curriculum is based on the teachings of A. Nagraj who is propounder of philosophy called `Madhyasth Darshan` or Co existentialism

DESIGN OF HAPPINESS CURRICULUM

Happiness curriculum has been initiated by the Delhi government to guide the learners towards the process of self-discovery from a young age. If we sow the seeds of sustainable happiness in children at a very young age then they will surely grow into stress-free and happy individuals. This curriculum focusses on the following four domains of human life:

- Self
- Family
- Soviety and
- Nature

The curriculum consists of various lessons. Every lesson is designed in a way to cultivate empathy, self-awareness, resilience, gratitude, and other social-emotional competencies among learners. The entire curriculum is being imparted through four strategies namely : Mindfulness, Stories, Activities and Expression

Mindfulness Section : Mindfulness means focussing on the present moment non judgementally. First day of every week is exclusively designated for mindfulness session of 35-45 minutes. It includes discussion about mindfulness and students`reflections. Daily Happiness class begins with 5-7 minutes of mindfulness.

Stories and Activities Section : In order to develop critical and reflective thinking among students, stories and activitis have been included in this curriculum. Purpose of these stories is to inspire the student to become a better person through self-evaluation. Through activities, the students easily understand their roles for themselves, their families, the society and the environment. They will cultivate better analysing power, rationality and decision making.

Expression Section : The term Expression in the Happiness Curriculum means the ability to explore and express the universal human values Last working day of every week is exclusively dedicated for the expression under the Happiness Curriculum.,

Integeration of the Happiness Curriculum and the English Language

Utilising the content of the Happiness Curriculum while teaching English language in a school yields to better understanding of the language and significant improvement in expression. Following domains are directly affected in positive scale with amalgamation of the Happiness Curriculum and the English language:

Language Proficiency and Fluency : As the Happiness curriculum is based on a philosophy, so many terms from philosophy are used in the language classroom which help student acquire lproficiency and fluency while using English Language.

Immersion and Exposure : When instructions during mindfulness are presented exclusively in English, students are immersed in an English-speaking milieu which helps in intonation and articulation.

Vocabulary Expansion : Pupils are presented to a diverse range of vocabulary associated with the value being discussed during Happiness class which help in developing vocabulay

Grammar and Syntax : By perceiving and executing correct grammar in a context, participants produce a more profound reading of English grammar codes, sentence formation, and phraseology.

Critical Thinking and Problem-Solving: Content delivery in English during Happiness class motivates participants to break down data, analyse, think perceptively, and solve situational issues using English language skills

Simultaneously, the magical impact of the integration can be seen in developing Cultural Awareness, Peer Feedback and Correction, Active Listening, Confidence Building, etc...

Conclusion : The Happiness curriculum is a mindset curriculum which primarily focusses on humanisation of education. In English language teaching the integration of this subject is capable of producing magical results. Language development through Happiness curriculum can definitely be simplified and made interesting for students and teachers as well.

- Manju
Ph. D. scholar
Algappa University
Regn No: R20161919/2018-19
Mob. 9599763454

- Dr. R. Thangam Research Guide
Asstt Prof. of English
Seethalakshmi Achi College
for Women, Pallathur,
Karaikudi TamilNadu

References:

i. Madhyastha Darshan -A philosophy by A.Nagraj.
II. Teachers' Handbooks on Happiness Curriculum by the SCERT Delhi.
III. UNESCO Report on SEL.

- **प्रत्येक दिन कुछ न कुछ ऐसा करने का उपाय बना लिजिये, जिसे आप जरा भी नही करना चाहते। यह बिना कष्ट अपना कर्तव्य निभाने की क्षमता अर्जित करने का स्वर्णिम साधन है।**

मार्क टवेन

- **जोखिम उठाईये। पूरी जिंदगी एक जोखिम है। सबसे आगे निकलने वाला व्यक्ति सामान्यता वह होता है, जो कर्म और दुस्साहस के लिए इच्छुक हो।**

डेल कार्नेगीज

- **किसी भी व्यक्ति के कार्य नहीं कर सकने के कारण निंदा नहीं करनी चाहिए, क्योकि हम सभी घटना क्रम और परिस्थितियों की उपज हैं और वातावरण, शिक्षा, संस्कार एवं स्वभाव के अधीन हैं।**

लिंकन

- **जब तक आप अपना सबकुछ व्यवस्थित नहीं रखेगे, तबतक आपको कोई न कोई परेशानी होती रहेगी। आप किसी न किसी समस्या से जुझते रहेंगे। आपका समय, आपकी शक्ति, आपका धन व्यर्थ बर्बाद होता रहेगा। एक न एक उलझन आपके सिर पर सवार रहेगी। व्यवस्थित जीवन का महत्व जानिए, मानिए और इसे स्वीकार कर उसका पालन कीजिए।**

स्वेट मार्डेन

- **आपके पास एक बगीचा और एक पुस्तकालए है तो फिर आपको किसी और चीज की आवश्यकता नहीं ।**

सिसरो

- **दुनिया में दो ही ताकते है- तलवार और कलम। और अंत में जीत हमेशा कलम की ही होती है।**

नेपोलियन

हिन्दी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

पंजीयन संख्या
RNI No. MPHIN/2002/9510

डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिवीजन/204/2024-2026 उज्जैन (म.प्र.)

प्रतिष्ठा में ,

____

____

____

____

पत्र व्यवहार का पता :
20, बागपुरा, सांवेर रोड,
उज्जैन 456 010 (म.प्र.)

प्रकाशक, मुद्रक **पिंकी सत्यप्रेमी** ने भारती दलित साहित्य अकादमी की ओर से
मालवा ग्राफिक्स, 29, वररुचि मार्ग, गुरुद्वारे के सामने, फ्रीगंज, उज्जैन फोन : 0734-4000030 से मुदित एवं
20, बागपुरा, सांवेर रोड, उज्जैन 456 010 (म.प्र.) फोन : 0734-2518379 से प्रकाशित।

सम्पादक : डॉ. तारा परमार